वर्ष 50 ★ अंक 08 ★ अगस्त 2023

₹ 15/-

हँसती दुनिया

हँसती दुनिया

वर्ष 50 • अंक 08 • अगस्त 2023 • पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

प्रकाशक एवं मुद्रक : राज कुमारी

ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली-110009 हेतु एच.टी. मीडिया लिमिटेड, प्लॉट न. 8, उद्योग विहार, ग्रेटर नोएडा-201 306 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 से प्रकाशित किया।

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Phone : 011-47660200
Fax : 011-27608215
E-mail : hduniya.hindi@nirankari.org
Website : www.nirankari.org

Available on Website

सदस्यता शुल्क

देश	1 वर्ष	3 वर्ष	5 वर्ष
भारत/नेपाल	₹ 150	₹ 400	₹ 700
यू.के.	£ 15	£ 40	£ 70
यूरोप	€ 20	€ 55	€ 95
अमेरिका	$ 25	$ 70	$ 120
कनाडा/आस्ट्रेलिया	$ 30	$ 85	$ 140

अन्य देश : उपरोक्तानुसार अमेरिकी डालर के बराबर राशि देय होगी।

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
12. चित्रकथा
24. बाबा अवतार सिंह जी के अनमोल वचन
25. निरंकारी राजमाता जी के अनमोल वचन
25. माता सविन्दर हरदेव जी के अनमोल वचन
34. किट्टी
40. कभी न भूलो
44. पढ़ो और हँसो
48. आपके पत्र मिले
50. रंग भरो

कहानियां

18. भ्रम
— राधेलाल 'नवचक्र'

28. पिंकी बदल गई
— सुरेश सौरभ

32. कर्म ही है जीवन का आधार
— सीताराम गुप्ता

38. छोड़ दो मुझे ...
— दिनेश दर्पण

42. सुधर गया कालू
— महेन्द्र सिंह शेखावत

46. घमण्ड का नतीजा
— विभा वर्मा

विशेष/लेख

8. हँसती दुनिया के प्रेरणा स्रोत
— विमलेश आहूजा

16. विजयी विश्व तिरंगा प्यारा
— हरजीत निषाद

20. विज्ञान प्रश्नोत्तरी
— घमंडीलाल अग्रवाल

22. ईसबगोल
— कैलाश जैन

26. वर्षा की एक बूंद
— महेन्द्र सिंह

26. मातृभूमि प्रेम
— रूपनारायण काबरा

30. अजब अनोखे मेढक
— किरण बाला

कविताएं

10. हम बच्चों का सपना
— कृष्ण शर्मा

11. स्वाधीनता का दिन
— गफूर 'स्नेही'

21. इस झण्डे को प्रणाम ...
— डॉ. सत्यनारायण

21. पन्द्रह अगस्त मनायें
— मुमताज हसन

27. आजादी हमने पाई है
— रामअवध राम

27. भारत वतन
— गोविन्द भारद्वाज

31. हॉकी का जादूगर
— डॉ. परशुराम शुक्ल

41. आजादी का बिगुल
— डॉ. ममता खत्री

47. पेड़ बड़ा उपकारी है
— रामअवध राम

47. पौधे
— गफूर 'स्नेही'

सबसे पहले

दुनिया की हँसती दुनिया

सन् 1973 में हँसती दुनिया पत्रिका की नींव उस समय रखी गई जब उस समय के सत्गुरु बाबा गुरबचन सिंह जी ने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए, उन्हें संदेश देने के लिए उस समय के सम्पादक–मंडल को अपना आशीर्वाद प्रदान किया। सभी ने मिलकर बच्चों की पत्रिका निकालने का कार्य आरम्भ किया और उसका नाम 'हँसती दुनिया' रखा गया। पत्रिका का पहला अंक त्रैमासिक के रूप में अक्टूबर–दिसम्बर 1973 को प्रकाशित किया गया।

बाबा गुरबचन सिंह जी बच्चों के भविष्य को लेकर बहुत संवेदनशील थे। वे मानते थे कि आज के बच्चे ही कल के भविष्य के निर्माता होंगे। बच्चों के जीवन में अच्छी शिक्षा, सभ्य व्यवहार, आध्यात्मिकता एवं उत्तम संस्कारों का निर्माण बचपन में, जिसे कच्ची उम्र कहा जाता है, में आसानी से किया जा सकता है। बच्चे चित्रकथाओं से जल्दी सीखते हैं। चित्रकथाओं के माध्यम से छोटी–छोटी कहानियों से, कविताओं और हँसी के फुहारों द्वारा बच्चों को आसानी से आकर्षित किया जा सकता है। यहीं से मौलिक शिक्षा, जिससे बच्चों की बुद्धि का उचित विकास हो, नैतिक आचरण दृढ़ हो, सद्चरित्र का निर्माण हो, बोल–चाल की भाषा भी मधुर और मृदुल हो और साथ ही साथ जीवन जीने की शैली जिसमें शरीर की स्वच्छता और विचारों की भी हो। अपने बड़ों का सम्मान कैसे करें और बड़ों के लिए भी सन्देश कि वे भी बच्चों को उसी तरह प्यार दें जैसा वे स्वयं चाहते हैं। बच्चों में बचपन से ही स्फूर्ति, निडरता, आत्मनिर्भरता, साहसपूर्ण कार्यों को करने की क्षमता को विकसित करने का प्रयास भी हँसती दुनिया द्वारा किया गया।

आज 'हँसती दुनिया' 2023 वर्ष में अपने 50 वर्ष भी पूरे कर चुकी है। जब हँसती दुनिया आरम्भ हुई थी, उस समय से ही मैं इसके साथ एक सहायक के रूप में जुड़ा रहा हूँ। समय के साथ इस पत्रिका ने अनेकों रूप बदले। त्रैमासिक से मासिक भी हो गई। इसका आकार भी बदल गया, रंग–रूप भी बदल गया और अब इसमें नये आधुनिक चित्रण और नये–नये स्तम्भ भी आरम्भ किए जा चुके हैं।

साथियों! लाखों हाथों में यह पत्रिका पहुँची है और इसे पढ़कर अनेकों लोगों का जीवन भी बदला है। समय की रफ्तार के साथ–साथ इस पत्रिका को पढ़ते–पढ़ते संस्कारों में परिवर्तन भी अवश्य आया है। इसी प्रयास को हमें सभी को मिलकर आगे बढ़ाना है। हमें पहले स्वयं में परिवर्तन लाना है और इस परिवर्तन से कोई अछूता नहीं रह सकेगा; वह हर व्यक्ति हमारे स्वभाव, आचरण से इतना प्रभावित हो कि वह भी अपने आचरण को बदल ले ताकि समाज में, देश में और संसार में प्रेम और शांति का वातावरण बन पाए।

इस अवसर पर सर्वप्रथम पहली प्रकाशित हँसती दुनिया से सत्गुरु बाबा गुरबचन सिंह जी एवं निरंकारी राजमाता जी के आशीर्वचनों को भी प्रकाशित किया जा रहा है (पृष्ठ 6 एवं 7 पर) जो आज के परिप्रेक्ष्य में भी उतना ही सार्थक है। समस्त 'हँसती दुनिया' एवं मानव परिवार इसके संस्थापक बाबा गुरबचन सिंह जी के आशीर्वाद से अनुग्रहीत एवं आभारी हैं। हृदय से नमन एवं धन्यवाद।

– विमलेश आहूजा

हमारे पवित्र ग्रंथ

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या 280

तन मन धन दा माण त्यागो शरण गुरु दी आ जाओ।
जिस रब दी है भाल तुहानूं इक छिन अन्दर पा जाओ।
सत्गुर है शाहां दा शाह जो देंदा दात इलाही ए।
सत्गुर है भण्डार मेहर दा जित्थे थोड़ न काई ए।
सत्गुर मालक कुल अकलां दा रूहां दा वी स्वामी ए।
आपे नाम जपावन वाला आप ही सत्गुर नामी ए।
मेहर करे तां मंगते दी इक छिन विच झोली भर देवे।
मेहर करे तां लोक सुखी परलोक सुहेला कर देवे।
एहदी मेहर दे सदके जीवन स्वर्गमयी हो जांदा ए।
कहे अवतार गुरु दे बाझों जीव ठोकरां खांदा ए।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि हे मानव, तुम जिस परमात्मा की खोज में लगे हो, जिसकी तलाश में जगह–जगह जा रहे हो। इस परमात्मा को क्षणभर में पा सकते हो, अगर तुम तन–मन–धन का मान त्याग कर सत्गुरु की शरण में आ जाओ। तुम्हारे पास तन–मन–धन रूप में परमात्मा को दी हुई यह जो उत्तम सौगात है, इसे सत्गुरु की शरण में आकर सच्चे मन से समर्पित कर दो। तुम्हारे इस समर्पण भाव से प्रसन्न होकर सत्गुरु तुम्हें निरंकार–प्रभु से तत्काल मिला देगा। समर्पित किया हुआ यह तन–मन–धन भी उपयोग के लिए तुम्हारे ही पास रहेगा। सत्गुरु शाहों का शाह है। यह दया और मेहर का भण्डार है। इसके पास किसी भी चीज की कोई कमी नहीं है। यह सभी आत्माओं का स्वामी और सभी प्रकार की बौद्धिक कुशलताओं के साथ इलाही दात देने वाला है।

बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि परमात्मा के अनेक नाम हैं फिर भी यह है एक ही। नाम जपाने वाला भी यही है और जिसका नाम जपना है वह नामी भी यही है।

संसार के समस्त जीव–जन्तु और सारे इन्सान इससे लेकर ही खाते हैं। सब मांगने वाले मंगते हैं, दाता केवल एक यही परमात्मा है जो हर मांगने वाले की झोली क्षणभर में भर देता है। सबको देने के बाद भी इसका असीम भण्डार कभी खाली नहीं होता। यह मेहर करे तो सांसारिक पदार्थों के अम्बार लग जाते हैं। लोक सुखी और परलोक सुहेला भी इसकी दया–कृपा से ही होता है।

संसार में एक ओर जहाँ सुख और आनंद है, वहीं दूसरी ओर ठोकरें भी हैं। सत्गुरु की कृपा से हमारा जीवन स्वर्गमयी बन सकता है। जिन्हें सत्गुरु नहीं मिलता उनका जीवन ठोकरें खाते हुए ही बीतता है। जगह–जगह जाकर वह खुशियाँ ढूंढता है लेकिन उसके हिस्से में दुख और परेशनियां ही आती हैं। इसलिए समय रहते तन–मन–धन का मान त्याग कर इसकी शरण में आ जाओ और अपना लोक–परलोक दोनों संवार लो।

भावार्थ : हरजीत निषाद

आशीर्वाद

गुरुबचन निवास,
संत निरंकारी कालोनी,
दिल्ली-११०००९.

आदरणीय सम्पादक महोदय,
धन निरंकार

मुझे यह जान कर अति प्रसन्नता हुई कि आपने बच्चों के लिए एक त्रैमासिक पत्रिका "हंसती दुनिया" के नाम से निकालने का निश्चय किया है। यह एक सराहनीय कार्य है। बच्चे भविष्य की आशा ही नहीं बल्कि समाज की उन्नति व प्रगति के प्रतीक भी होते हैं। निराश, आलसी, अनपढ़ और मलीन बच्चे समाज के विनाश के चिन्ह हैं। इसलिये इन में बचपन से ही आत्मविश्वास, निर्भीकता, साहस और हिम्मत का संचार करना अनिवार्य है, ताकि बड़े होकर ये अपने पूर्वजों का उत्तरदायित्व भलि-भांति सम्भाल सकें।

मेरी हार्दिक इच्छा है कि निरंकार आप को इस कार्य में सफलता प्रदान करे। जनता से, विशेषतः निरंकारी महापुरुषों से मेरा अनुरोध है कि वे इस पत्रिका को अपना पूरा सहयोग दें।

मेरा आशीर्वाद और शुभ कामनाएं आपके साथ हैं।

गुरबचन सिंह

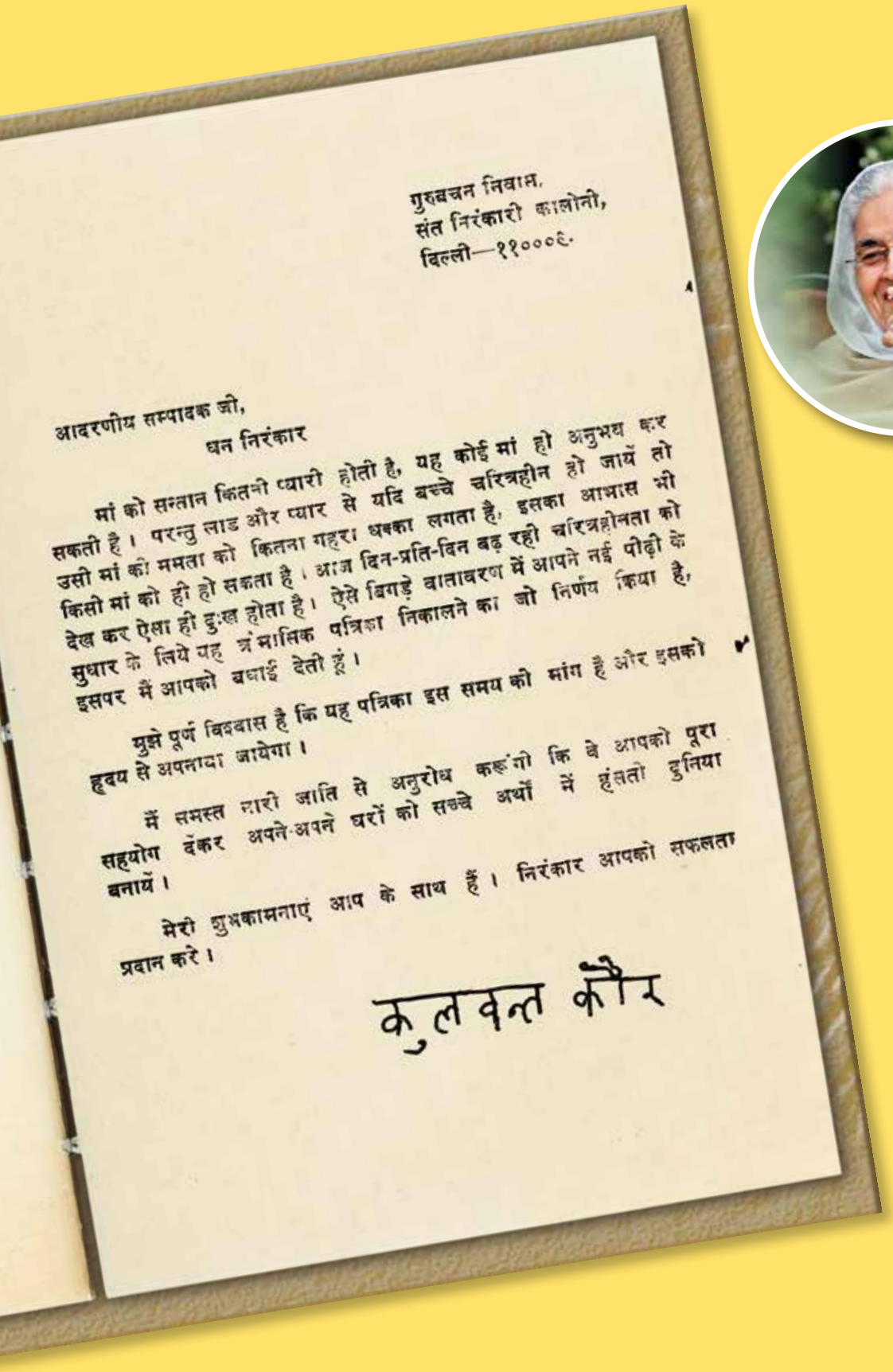

गुरुबचन निवास,
संत निरंकारी कालोनी,
दिल्ली—११०००९.

आदरणीय सम्पादक जी,
धन निरंकार

मां को सन्तान कितनी प्यारी होती है, यह कोई मां ही अनुभव कर सकती है। परन्तु लाड और प्यार से यदि बच्चे चरित्रहीन हो जायें तो उसी मां की ममता को कितना गहरा धक्का लगता है, इसका आभास भी किसी मां को ही हो सकता है। आज दिन-प्रति-दिन बढ़ रही चरित्रहीनता को देख कर ऐसा ही दुःख होता है। ऐसे बिगड़े वातावरण में आपने नई पीढ़ी के सुधार के लिये यह त्रैमासिक पत्रिका निकालने का जो निर्णय किया है, इसपर मैं आपको बधाई देती हूं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका इस समय की मांग है और इसको हृदय से अपनाया जायेगा।

मैं समस्त नारी जाति से अनुरोध करूंगी कि वे आपको पूरा सहयोग देकर अपने-अपने घरों को सच्चे अर्थों में हंसती दुनिया बनायें।

मेरी शुभकामनाएं आप के साथ हैं। निरंकार आपको सफलता प्रदान करे।

कुलवन्त कौर

हँसती दुनिया के प्रेरणा-स्रोत

एक परिचय

वह पल, क्षण, वह लम्हा मुझे आज भी रोमांचित कर रहा है। जिस समय बाल पत्रिका 'हँसती दुनिया' का विमोचन निरंकारी बाबा गुरबचन सिंह जी महाराज ने अक्टूबर 1973 में किया। उस समय पत्रिका समूह के मुख्य सम्पादक आदरणीय निर्मल जोशी, दादाश्री जे. आर. डी. सत्यार्थी जी, ग़ालिब कवि मान सिंह जी 'मान', श्री हरदेव सिंह जी 'अलमस्त' और हँसती दुनिया के सम्पादक विनय जोशी जी एवं भूपेन्द्र बेकल जी के साथ–साथ अनेकों महात्मा भी उपस्थित थे। मैं स्वयं इन महान विभूतियों के बीच गौरवान्वित महसूस कर रहा था। सत्गुरु बाबा गुरबचन सिंह जी के दिशा–निर्देशों एवं निरंकारी राजमाता जी का नारी जाति से अनुरोध के साथ पत्रिका ने अपना कार्य करना आरम्भ कर दिया।

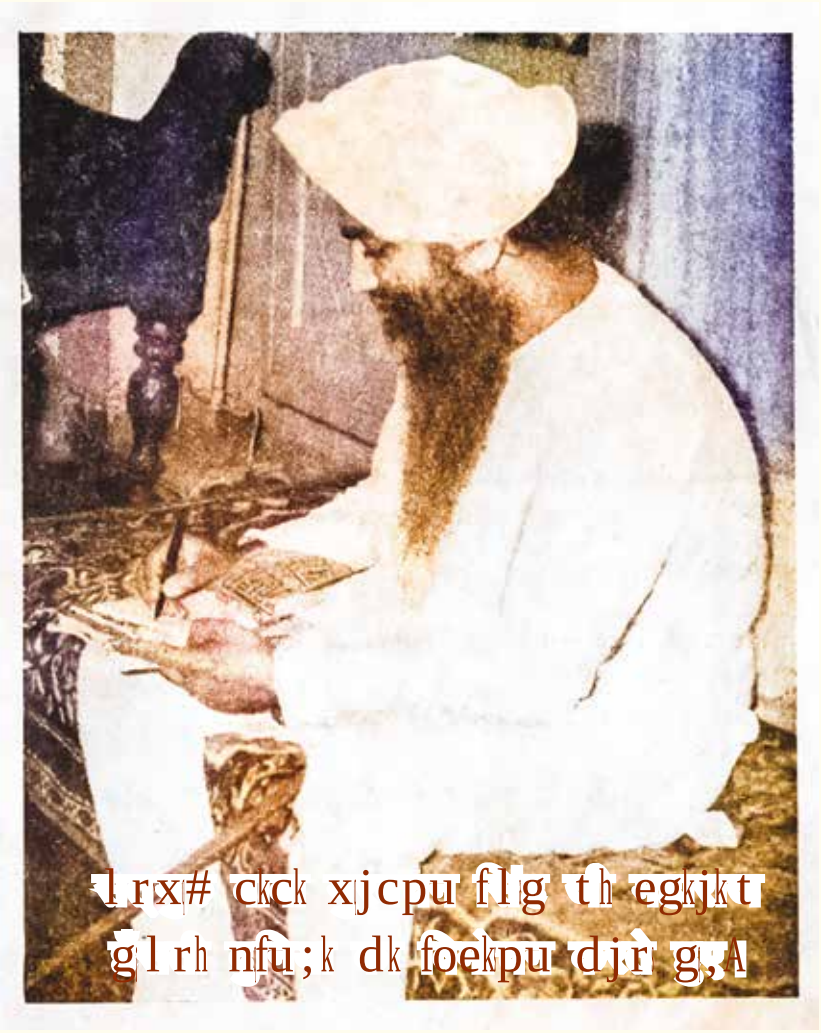

बच्चों का हृदय बहुत कोमल होता है और उनकी जानने की इच्छा भी बहुत प्रबल होती है। वे दूसरे को देखकर उसकी नकल भी जल्दी कर लेते हैं। इसलिए उन्हें जो बचपन में सिखाया जाता है या वे स्वयं बड़ों के व्यवहार से सीखते हैं वे उसे ही अपने जीवन में उतारने लगते हैं। कोमल और गीली मिट्टी को कोई भी आकार एवं रूप दिया जा सकता है। लेकिन मिट्टी सूख जाने के बाद उसमें परिवर्तन असम्भव सा हो जाता है। बचपन में ही प्यार, आदर, नम्र एवं मधुर बोलचाल बच्चों को बहुत भाता है। उसी समय उनमें ऐसे संस्कार डाल दिए जाएं जिनसे वे अपने आत्मविश्वास को जगा पाएं, साहसी और निडर बन पाएं। समाज में सजगता के साथ जीते हुए अपने कर्तव्यों को निभा पाएं अर्थात् वे अच्छे व्यक्ति के साथ–साथ एक सभ्य नागरिक

एवं उत्तम चरित्र के मालिक भी बन पाएं। इन सभी कार्यों को एक जीवन्त रूप बच्चों के द्वारा ही पूरा किया जा सकता है जो कल के भविष्य के निर्माता होंगे। इस अवधारणा के साथ श्री भूपेन्द्र 'बेकल' जी एवं श्री विनय जोशी को सम्पादक की संयुक्त जिम्मेदारी सौंपी गई।

भूपेन्द्र बेकल को 'बेकल जी' एवं विनय जोशी को 'विनय जी' के नाम से जाना जाता है। आप दोनों समकालीन तो थे ही; समआयु भी थे। आप दोनों ही आध्यात्मिक जगत में ऊँचा स्थान रखते थे। आप दोनों बहुत सुलझे हुए कवि, लेखक, प्रखर वक्ता एवं प्रचारक भी थे। आपने अनेकों पुस्तकों को लिखा भी और अनेकों पुस्तकों का सम्पादन भी किया। आप मृदु स्वभाव के धनी थे। सबकी समस्या सुनना और निराकरण करना आपके व्यक्तित्व का प्रमुख लक्षण बन चुका था।

भूपेन्द्र 'बेकल' जी का जन्म 4 जून 1950 को कानपुर क्षेत्र में हुआ। आपके माता–पिता एवं पूरा परिवार निरंकारी मिशन के साथ जुड़ा हुआ था। 'बेकल जी' बचपन से ही परिश्रमी, अनुशासित एवं धार्मिक विचारों के धनी थे। आप कर्मठ, ईमानदार, धैर्यवान, सर्वप्रिय बेकल के नाम से जाने जाते थे। आपने युवावस्था में ही कविताएं, लेख, प्रेरक–प्रसंग लिखना आरम्भ कर दिया था। आप अक्सर विवेकानन्द जी का उदाहरण देते थे। जिसमें उन्होंने कहा था– I need reformers who can reform themselves 'मुझे कुछ स्वयं सुधारक चाहिएं, जो स्वयं अपना सुधार कर सके' इसी सन्देश के साथ आप हँसती दुनिया में बच्चों को नैतिकता, सेवा, मृदु व्यवहार एवं बड़ों का सम्मान करने की शिक्षा भी देते रहे। हँसती दुनिया की सजावट एवं रूपरेखा को निखारने में आपका प्रिंटिंग टेक्नॉलिजी का अनुभव बहुत काम आया। आपने हँसती दुनिया को त्रैमासिक से मासिक बनाने में भरसक प्रयत्न किया। आप सुसज्जित कला में प्रवीण थे।

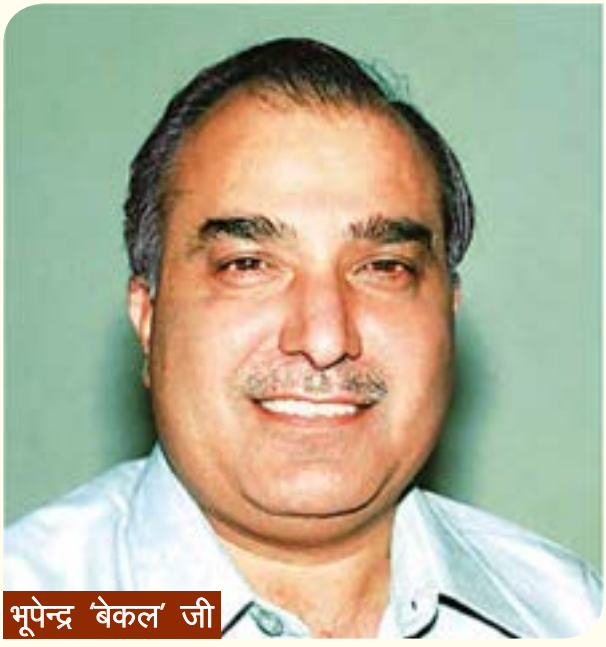
भूपेन्द्र 'बेकल' जी

आप व्यवसाय से एक बैंक अधिकारी के रूप में भी कार्य करते थे परन्तु साथ ही साथ युवाशक्ति को दिशा देने के लिए कई कॉन्फ्रेंस एवं सेमिनार भी किये। आपकी एक कविता ''मिलजुल कर रहो, ए भाई मिलजुलकर रहो'' ने बहुत ख्याति प्राप्त की। आप अनेकों अन्य विभागों में भी कार्यरत रहते। आप हँसती दुनिया के साथ–साथ 'सन्त निरंकारी' हिन्दी में भी सहयोग करते थे। 1983 में आपको 'सन्त निरंकारी' हिन्दी का सम्पादक बना दिया गया। उसी दिन से विनय जोशी जी को हँसती दुनिया का पूरा भार सौंप दिया गया और विमलेश आहूजा को सहायक सम्पादक बना दिया।

विनय जोशी जी का जन्म 18 सितम्बर 1950 को निरंकारी मिशन के विद्धान, प्रखर एवं मुखर वक्ता श्री निर्मल जोशी के घर हुआ। विनय जी अक्सर सरल, सहज और सजग रहने का सन्देश भी देते थे और इसी तरह का जीवन भी जीते थे। आप एक शिक्षक के रूप में एक स्कूल में सेवारत रहे। आपको अध्यापन के क्षेत्र में योगदान के लिए 'स्कूल रत्न अवार्ड' से भी सम्मानित किया गया। आप हँसती

विनय जोशी जी

दुनिया पत्रिका के माध्यम से बाल साहित्य को एक नई ऊँचाई तक लेकर गये। आपके द्वारा लिखे गये सम्पादकीय 'सबसे पहले' के लेख बच्चों में अध्यात्म एवं नैतिक शिक्षा का आधार बने। इसी पत्रिका में आपका एक धारावाहिक 'जंगल का भूत' बहुत ही रुचिकर एवं सराहनीय रहा। आपको हँसती दुनिया में 'बड़े भैया' के नाम से भी जाना जाता था क्योंकि आप उसमें बच्चों के प्रश्नों के उत्तर उन्हीं की भाषा में देते थे जो उनको आसानी से समझ आ सके। आपने छोटी–छोटी कहानियों के माध्यम से जीवन जीने का सन्देश दिया, जिसे बच्चे अपने जीवन में ढाल सकें। आपके अनेकों प्रेरक–प्रसंग, लेख, कविताएं केवल बच्चों को ही नहीं युवाओं एवं प्रौढ़ व्यक्तियों को भी विनयशीलता, सरलता, सहजता और सजगता का पाठ पढ़ाते थे।

आप 28 अगस्त 2013 को इस देह से विदेही होकर निराकार में लीन हो गए। उसी समय से सम्पादक की सेवा विमलेश आहूजा को एवं सहायक सम्पादक की सेवा सुभाषचन्द्र जी को सौंपी गई।

– विमलेश आहूजा

हम बच्चों का सपना

बाल कविता : कृष्ण शर्मा

हम बच्चे करते हैं ऐलान,
भारत होगा जग में महान।

यह देश है निर्भय वीरों का,
मुनियों गुणवान फकीरों का।
इसका कोई क्या करे बखान,
यह देश गुणों की है इक खान।।

हम बच्चे करते हैं ऐलान,
भारत होगा जग में महान।
आओ बच्चो हम यह ठानें,
हर मानव को अपना मानें।
हिन्दू–मुस्लिम हैं एक समान,
सिख–ईसाई इसकी शान।।

हम बच्चे करते हैं ऐलान,
भारत होगा जग में महान।
देश–द्रोहियों को मजा चखाएं,
भारत शत्रु–रहित बनाएं।
तभी आ पाएंगे मेहमान,
करेंगे भारत का गुणगान।।

हम बच्चे करते हैं ऐलान,
भारत होगा जग में महान।

स्वाधीनता का दिन

राष्ट्रीय बालगीत : गफूर 'स्नेही'

स्वाधीनता का दिन पावन,
आओ गाएं जन गण मन।
जयहिंद जय जय गान,
अमर रहे ये हिन्दुस्तान।।

न जाति न मजहब,
एक भारतीय हम सब।
एकता से जाए सबल बन,
स्वाधीनता का दिन पावन।।

उत्तर दक्षिण एक हैं,
पूरब पश्चिम नेक हैं।
मध्य शरीर में है धड़कन,
स्वाधीनता का दिन पावन।।

साथ चले गाते तराने,
निर्बल न कोई जाने।
शक्ति शांति का प्रण,
स्वाधीनता का दिन पावन।।

शहीदों को सलाम है,
इतिहास में पैगाम है।
फूट में एकता है निवारण,
स्वाधीनता का दिन पावन।।

गाँधी नेहरू भगत सुभाष,
गौरवशाली इनसे इतिहास।
भविष्य है ज्योति स्वर्ण,
स्वाधीनता का दिन पावन।।

चित्रकथा

चित्रांकन एवं लेखन : अजय कालरा

कैसे वफादार हो? चोर भीतर आ रहा है, तुम भौंकते भी नहीं। अरे मालिक को जगाओ।

कुत्ता फिर भी भौंकने को तैयार नहीं हुआ।

मस्त होकर सो जाओ। मालिक हमारा ध्यान नहीं रखता तो हम क्यों ध्यान रखें। चोरी हो जाएगी तभी उसकी अक्ल ठिकाने आएगी।

अरे! बेवकूफ। चोर भीतर आ गया है। तुम अपने कर्तव्य का पालन करो। भौंको। मालिक को जगाओ।

मुझे मेरा काम मत सिखाओ, चुप रहो।

तुम नहीं भौंकोगे तो मालिक को मैं ही जगा देता हूँ। मैं मालिक का नुकसान होते नहीं देख सकता।

कुत्ते के रोकने पर भी गधा नहीं माना। वह जोर–जोर से रेंकने लगा।

हैंचू

धोबी की आँख खुली। आधी रात को गधे को रेंकते पाकर उसे गुस्सा आ गया और डंडा लेकर उसने गधे का पीट डाला।

सारी नींद खराब कर दी। ले मजा चख।

चोर धोबी के पुनः सो जाने तक छिपा रहा और मौका मिलते ही चोरी करके भाग गया।

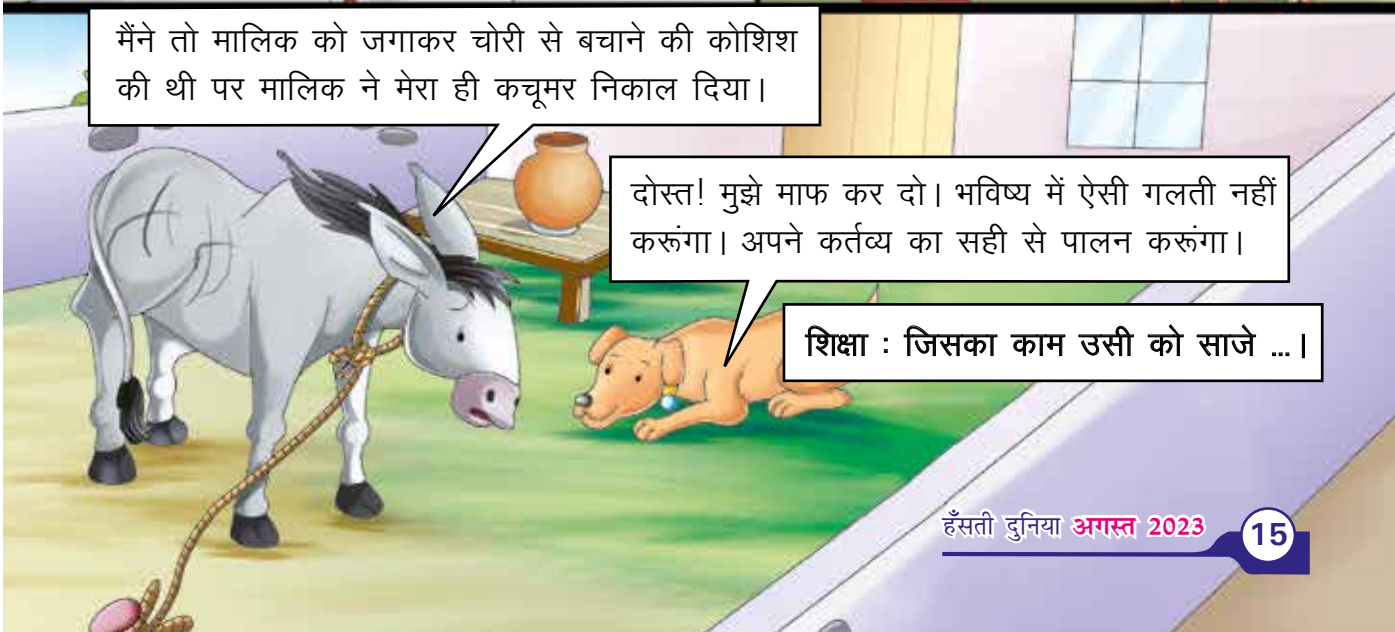

शिक्षा : जिसका काम उसी को साजे ...।

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा

विशेष लेख : हरजीत निषाद

तिरंगा भारत का राष्ट्रीय ध्वज है। यह हर भारतीय के सम्मान और गर्व का केन्द्र है। तिरंगे का वर्तमान स्वरूप अनेक परिवर्तनों के बाद अस्तित्व में आया। भारतीय राष्ट्रीय ध्वज को इसके वर्तमान स्वरूप में 22 जुलाई 1947 को आयोजित भारतीय संविधान सभा की बैठक के दौरान अपनाया गया था, जो 15 अगस्त 1947 को अंग्रेजों से भारत की स्वतंत्रता के कुछ दिन पूर्व ही गठित गई थी। हमारे लिए तिरंगा बेहद महत्वपूर्ण और गौरव का विषय है। केसरिया, सफेद और हरा रंग प्रयोग होने के कारण इसे तिरंगा अर्थात् तीन रंगों वाला कहा गया। इसके मौजूदा स्वरूप का विकास भी कई दौर में हुआ। अभी जो तिरंगा फहराया जाता है उसे 22 जुलाई 1947 को अपनाया गया था। तिरंगे को आंध्र प्रदेश के पिंगली वैंकैया ने बनाया था। तिरंगे को फहराने के कुछ निर्धारित नियम हैं।

तिरंगा फहराने के नियम

किसी मंच पर तिरंगा फहराते समय जब बोलने वाले का मुँह श्रोताओं की तरफ हो तब तिरंगा हमेशा उसके दाहिने तरफ होना चाहिए। भारत के राष्ट्रीय ध्वज में पहले चरखा बना हुआ था। बाद में चरखे की जगह अशोक चक्र लिया गया। रांची का पहाड़ी मंदिर भारत का अकेला ऐसा मंदिर है जहाँ तिरंगा फहराया जाता है।

दिल्ली के विभिन्न स्थानों पर बहुत ऊँचाई पर तिरंगा फहराया गया है जो कार, बस, मेट्रो आदि से सफर करते समय बहुत सुन्दर लगता है और हर भारतीय को गौरवान्वित करता है। देश के ध्वज को फहराने का एक निर्धारित नियम होता है।

भारत में 'फ्लैग कोड ऑफ इंडिया' (भारतीय ध्वज संहिता) नाम का एक कानून है जिसमें तिरंगे को फहराने के नियम निर्धारित किए गए हैं। इन नियमों का उल्लंघन करने वालों को सजा भी हो सकती है। तिरंगा हमेशा कॉटन, सिल्क या खादी का ही होना चाहिए। प्लास्टिक का झंडा बनाने की मनाही है। तिरंगे का निर्माण हमेशा आयताकार रूप में ही होता है। जिसका अनुपात 3:2 तय है। इसके बीच में बने अशोक चक्र का कोई माप तय नहीं है लेकिन इसमें 24 तीलियाँ होनी आवश्यक हैं।

किसी भी स्थिति में तिरंगा जमीन पर टच नहीं होना चाहिए। यह इसका अपमान होता है। तिरंगे को किसी भी प्रकार के यूनिफॉर्म या सजावट में प्रयोग नहीं लाया जा सकता। किसी भी दूसरे झंडे को राष्ट्रीय झंडे से ऊँचा या ऊपर नहीं लगा सकते और न ही बराबर रख सकते हैं।

29 मई 1953 में भारत का राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा सबसे ऊँची पर्वत की चोटी माउंट एवरेस्ट पर यूनियन जैक तथा नेपाली राष्ट्रीय ध्वज के साथ फहराता नजर आया था। इस समय शेरपा तेनजिंग और एडमंड हिलेरी ने एवरेस्ट फतह की थी। आम नागरिकों को अपने घरों या ऑफिस में आम दिनों में भी तिरंगा फहराने की अनुमति 22 दिसंबर 2002 के बाद मिली। तिरंगे को रात में फहराने की अनुमति साल 2009 में दी गई।

पूरे भारत में 21×14 फीट के झंडे केवल तीन जगह पर ही फहराए जाते हैं : कर्नाटक का नारगुंड किला, महाराष्ट्र का पनहाला किला और मध्य प्रदेश के ग्वालियर में स्थित किला। देश के सबसे ऊँचे तिरंगों में शामिल हैं– अटारी बार्डर 360 फीट, कोल्हापुर

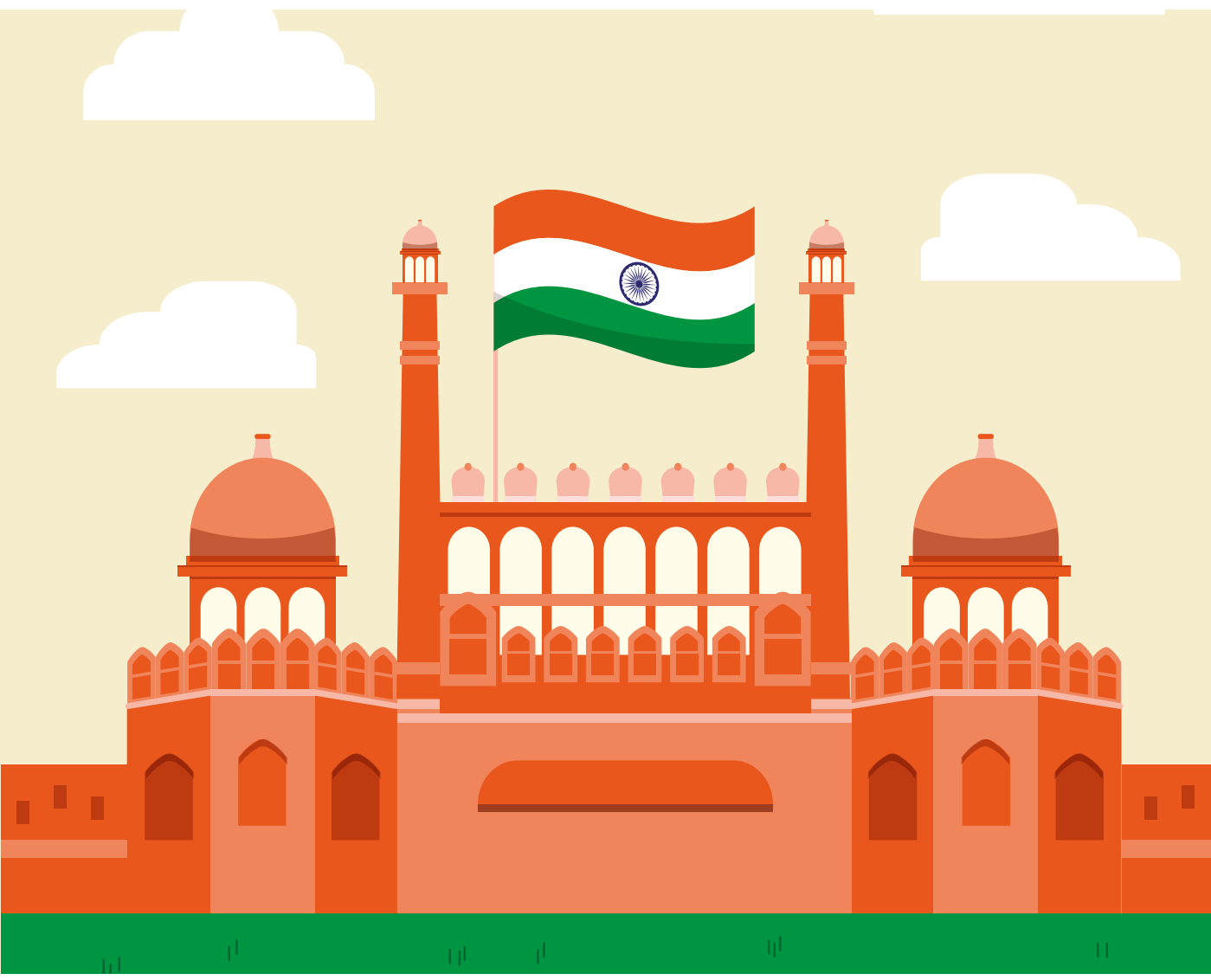

303 फीट, पहाड़ी मंदिर रांची 293 फीट, तेलीबांधा रायपुर 269 फीट, फरीदाबाद 250 फीट, भोपाल 237 फीट, कनाट प्लेस, दिल्ली 207 फीट, जयपुर 206 फीट की ऊँचाई पर फहराया गया तिरंगा। राष्ट्रपति भवन के संग्रहालय में एक ऐसा लघु तिरंगा है जिसे सोने के स्तम्भ पर हीरे–जवाहरातों से जड़कर बनाया गया है। भारत के संविधान के अनुसार किसी राष्ट्र विभूति का निधन होने और राष्ट्रीय शोक घोषित होने पर कुछ समय के लिए ध्वज को झुका दिया जाता है। लेकिन सिर्फ उसी भवन का तिरंगा झुकाया जाता है जिस भवन में उस विभूति का पार्थिव शरीर रखा है। जैसे ही पार्थिव शरीर को भवन से बाहर निकाला जाता है, वैसे ही ध्वज को पूरी ऊँचाई तक फहरा दिया जाता है।

देता है सम्मान तिरंगा

देश के लिए अपने प्राणों को न्यौछावर करने वाले शहीदों और देश की महान शख्सियतों को तिरंगे में लपेटा जाता है। इस दौरान केसरिया पट्टी पैरों की तरफ होनी चाहिए।

दुनियाभर में भारतीयों को अपने घरों में तिरंगा फहराने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए स्वतंत्रता के 75वें वर्ष के अवसर पर विशेष अभियान चलाया गया जिसका हर भारतीय की तरफ से भरपूर स्वागत किया गया। ◆

भ्रम

बाल कहानी : राधेलाल 'नवचक्र'

एक नदी थी स्वर्ण रेखा। नदी के किनारे एक महर्षि का आश्रम था। कई शिष्य वहाँ रहकर विद्याध्ययन करते थे। एक दिन की बात है। सुबह की बेला थी। हवा धीरे–धीरे बह रही थी। महर्षि शिष्यों को ज्ञान की कुछ बातें बता रहे थे। अचानक उस इलाके का कुख्यात डाकू कालू सिंह वहाँ आ धमका। उसने एक नजर महर्षि और उनके शिष्यों पर डाली। महर्षि और उनके शिष्यों की नजर उस ओर नहीं गयी थी। वे उसके आगमन से बिल्कुल बेखबर थे।

कुछ क्षण डाकू कालू सिंह अपनी जगह खड़ा रहा। मगर नजर नहीं पड़ने के कारण किसी ने उससे कुछ नहीं कहा। उसने इसे अपना अपमान समझा। वह गरज उठा– महर्षि तेरी यह मजाल।

झट सबकी नजर उस ओर गयी। महर्षि कोमल स्वर में बोले– कौन हो भाई?

–नहीं जानता मुझे? मैं हूँ डाकू कालू सिंह।– उसने अकड़ दिखाई।

–यह तो आश्रम है। यहाँ विद्यार्थी ज्ञानार्जन के लिए आते हैं। डाकू का यहाँ क्या काम? फिर भी कहो, मैं तुम्हारी क्या सेवा करूँ?– महर्षि शान्त स्वर में बोले।

–यहाँ मेरा अपमान हुआ है। मैं अपना अपमान सहन नहीं कर सकता।– डाकू कालू सिंह की आँखें गुस्से से लाल–पीली नजर आ रही थी।

– कैसा अपमान?– महर्षि ने पूछा।

–मैं यहाँ बहुत देर से खड़ा हूँ। मगर किसी ने मेरा कुछ ख्याल नहीं किया।– डाकू कालू सिंह ने फिर कहा– महर्षि अच्छी तरह जान लो, यह मेरा इलाका है। मेरी इच्छा के बिना यहाँ पत्ता तक नहीं हिलता है।

–यह तुम्हारा भ्रम है, कालू सिंह।–महर्षि ने निर्भीकतापूर्वक कहा।– किसी भी डाकू में इतनी ताकत हो ही नहीं सकती कि उसकी इच्छा के बिना पत्ता तक नहीं हिले।

–यह सच है।– कालू सिंह अपनी बात पर खूब जोर देकर बोला।

–कभी नहीं, सामने पेड़ के पत्ते हिल रहे हैं न। उन्हें हिलने से तुम रोको तो देखूँ। अभी तुम्हारी ताकत का अन्दाजा हमें भी मिल जाएगा।– महर्षि ने साफ कहा।

–मेरे कहने का मतलब तुमने नहीं समझा महर्षि।– डाकू कालू सिंह गरजा।

–खूब समझा है, नासमझ तुम हो। जरूरत है तुम्हें समझने की, हमें नहीं।

उधर देखो, पेड़ के पत्ते अब नहीं हिल रहे हैं, तुम अपनी ताकत लगाकर उन्हें हिलाने की कोशिश करो, पत्ते नहीं हिलेंगे।

कालू सिंह को महर्षि की बात अटपटी लगी।

वह आगे बढ़ा। पेड़ के करीब गया।

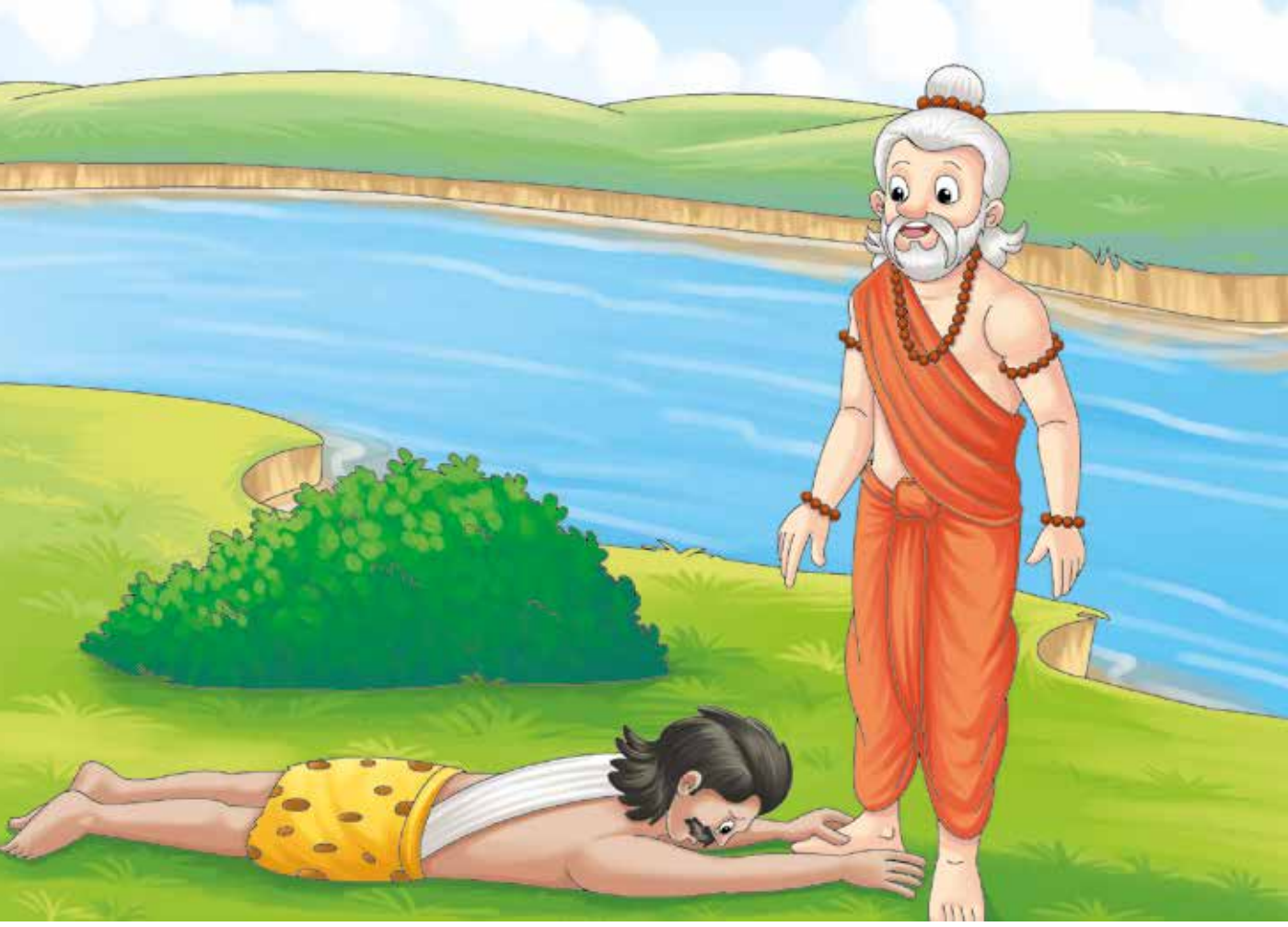

उसने पेड़ की डाल को झकझोर कर पत्ते हिलाने की भरपूर कोशिश की। मगर वह पेड़ की डाल को झकझोर नहीं सका। एक भी पत्ता न हिला न डुला।– कालू सिंह थककर पसीने से नहा उठा।

–अब पत्ते हिलेंगे।– महर्षि ने कहा तो पेड़ के पत्ते हिलने लगे।

डाकू कालू सिंह को महर्षि ने कई बार यह करिश्मा दिखाया कि वह जो बोलते थे, सामने के पेड़ पत्ते उनकी आज्ञा का पालन करते थे। कालू सिंह को महर्षि की दिव्य शक्ति की झलक मिल गयी। क्षणभर में उसका क्रोध श्रद्धा में बदल गया। वह झट महर्षि के पैरों में गिर पड़ा और फूट–फूटकर रोने लगा।

महर्षि ने उसे उठाया और फिर पूछा– रोते क्यों हो?

–मैंने जीवन में बहुत कुकर्म किए हैं ऋषिवर। अब आप ही मेरा कल्याण कर सकते हैं। मैं आपकी शरण में हूँ।– कालू सिंह विनम्र हो बोला।

महर्षि ने उसे समझाया– कालू सिंह, याद रखो। शारीरिक ताकत के दुरुपयोग से ताकत कभी बढ़ती नहीं है बल्कि घटती ही है। आज तक तुमने केवल ताकत का दुरुपयोग ही किया है। अपना कल्याण चाहते हो तो एक काम करो।

–कहिए।

–आज से अपनी ताकत का सदुपयोग करना सीखो। परोपकार के कार्यों में अपने को लगाओ। तुम्हारे आज तक के कुकर्मों का यही सही प्रायश्चित है। बीमारी का इलाज है।– महर्षि ने अपनी बात पूरी की।

–ऐसा ही करूँगा।– कहकर डाकू कालू सिंह वहाँ से चल पड़ा। ◆

वैज्ञानिक जानकारी : घमंडीलाल अग्रवाल

विज्ञान प्रश्नोत्तरी

प्रश्न : अधिक ऊँचाई पर उड़ते हुए पक्षियों की छाया पृथ्वी पर क्यों नहीं बनती है?

उत्तर : सूर्य प्रकाश का बहुत बड़ा स्रोत है जबकि पक्षी बहुत छोटे होते हैं। पक्षियों की घटती हुई छाया और बढ़ती हुई उपछाया बनती है। पक्षियों के पृथ्वी से अधिक ऊँचाई पर उड़ने के कारण छाया घटकर रास्ते में ही खो जाती है। उपछाया अधिक बड़ी लेकिन बहुत हल्की होने के कारण दिखाई नहीं पड़ती। बस, यही कारण है कि अधिक ऊँचाई पर उड़ते हुए पक्षियों की छाया पृथ्वी पर नहीं बनती है।

प्रश्न : बिजली के बल्बों में पतला तार क्यों प्रयुक्त होता है?

उत्तर : चालक का वह गुण जिसके द्वारा विद्युतधारा के प्रवाह का विरोध किया जाता है, प्रतिरोध कहलाता है। पतले तार का प्रतिरोध अधिक होता है जबकि मोटे तार का कम। अतः बिजली के बल्बों में पतला तार ही प्रयोग में लाया जाता है।

प्रश्न : वर्षा की बूँदें गोल क्यों होती हैं?

उत्तर : पानी की संरचना छोटे–छोटे अणुओं से मिलकर ही होती है। ये अणु परस्पर एक–दूसरे को आकर्षित भी करते हैं। इसी आकर्षण के कारण पानी सिकुड़ता है तथा स्थान भी कम घेरता है। पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति के कारण ही बूँदें नीचे को गिरती हैं किन्तु पानी के अणु पृष्ठ–तनाव द्वारा परस्पर एकत्रित होते हैं। इसी वजह से बूँदें गोल आकार ले लेती हैं।

प्रश्न : साइकिल के टायर खुरदरे क्यों होते हैं?

उत्तर : जब एक तल दूसरे तल पर गति करता है तो उस गति का विरोधक–बल उत्पन्न हो जाता है जिसे घर्षण–बल कहते हैं। घर्षण–बल जितना अधिक होता है, वस्तु उतनी ही सुगमता से गति कर सकती है। साइकिल के टायर इसलिए खुरदरे बनाएं जाते हैं ताकि घर्षण–बल अधिक रहे तथा साइकिल सुविधाजनक ढंग से चले। खुरदरे तल पर घर्षण समतल की अपेक्षा अधिक रहता है।

इस झण्डे को प्रणाम करें ...

कविता : डॉ. सत्यनारायण

एक रहे हम, नेक रहे हम,
यही देश की शान है।
अनेकता में एकता ही,
इस देश की पहचान है।।

जाति अलग, भाषा न्यारी,
वेशभूषा भी प्यारी–प्यारी।
रंग–बोली रूप है न्यारा,
पर एकता ही एक निशान है।।

उत्तर से दक्षिण तक फैला,
पूरब पश्चिम का भरा है थैला।
सागर से हिमालय तक,
सब भारत के प्राण हैं।।

आओ सभी एक काम करें,
इस झण्डे को प्रणाम करें।
जन–जन है प्राणों से प्यारा,
सभी देश की शान हैं।।

पन्द्रह अगस्त मनायें

बाल कविता : मुमताज हसन

आओ पन्द्रह अगस्त मनायें,
जन–जन में खुशियां लुटायें।

मिल–जुलकर सब नाचें गायें,
हर छत पे तिरंगा लहरायें।

आज न कोई रहे अकेला,
लगे यहाँ एकता का मेला।

भारत का सम्मान बढ़ायें,
आओ पन्द्रह अगस्त मनायें।

तिरंगे की लाज बचाना है,
कर्तव्य से नहीं डिग जाना है।

हिन्दवासियों को जगाना है,
अशिक्षा का तिमिर मिटाना है।

जिन वीरों से मिली आजादी,
आओ शीश उन्हें नवायें।

आओ पन्द्रह अगस्त मनायें,
जन–जन में खुशियां लुटायें।

कब्ज की रामबाण औषधि : ईसबगोल

आलेख (सेहत) : कैलाश जैन

हमारी प्राचीन चिकित्सा पद्धति प्राकृतिक पदार्थों और जड़ी बूटियों पर आधारित थी। आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति में साध्य–असाध्य रोगों का इलाज प्राकृतिक वनस्पतियों के माध्यम से सफलतापूर्वक किया जाता था। समय की धुंध के साथ हम कई प्राकृतिक औषधियों को भुला बैठे। 'ईसबगोल' जैसी चमत्कारी प्राकृतिक औषधि भी उन्हीं में से एक है। हमारे वैदिक साहित्य और प्राचीन आयुर्वेदिक ग्रन्थों में इसका उल्लेख मिलता है। संस्कृत साहित्य में इसे 'स्निग्धबीजम्' नाम से सम्बोधित किया गया है।

ईसबगोल पश्चिम एशियाई मूल का पौधा है। यह तना रहित एक झाड़ीनुमा पौधा है जिसकी अधिकतम ऊँचाई ढाई से तीन फुट तक होती है। इसके पत्ते महीन होते हैं तथा इसकी टहनियों के सिरे पर गेहूँ की तरह बालियां लगती हैं तथा फूल आते हैं। फूलों में नाव के आकार के बीज होते हैं। इसके बीजों पर सफेद व पतली झिल्ली होती है। यह झिल्ली ही दरअसल ईसबगोल की भूसी कहलाती है। बीजों से भूसी निकालने का कार्य हाथ से चलाई जाने वाली चक्कियों और मशीनों से किया जाता है। इस भूसी का सर्वाधिक औषधीय महत्व है।

ईसबगोल के औषधीय महत्व को प्रायः प्रत्येक चिकित्सा पद्धति में स्वीकार किया गया है। यूनानी चिकित्सा पद्धति में इसके बीजों को शीतल, शांतिदायक, मलावरोध को दूर करने वाला तथा अतिसार, पेचिश और आंत के जख्म आदि रोगों में उपयोगी बताया गया है। प्रसिद्ध चिकित्सक मुजर्रबात अकबरी के अनुसार, नियमित रूप से प्रतिदिन ईसबगोल का सेवन करने से श्वसन रोगों तथा दमें में बहुत राहत मिलती है। अठाहरवीं शताब्दी के प्रतिभाशाली चिकित्सा विज्ञानी फ्लेमिंग व रॉक्सबर्ग ने भी अतिसार रोग के उपचार के लिए ईसबगोल को रामबाण औषधि बताया।

रासायनिक संरचना के अनुसार, ईसबगोल के बीजों व भूसी में 30 प्रतिशत तक 'म्यूसिलेज' नामक तत्व पाया जाता है। म्यूसिलेज की इस प्रचुर मात्रा के कारण इसके बीजों में बीस गुना पानी मिलाने पर यह एक स्वाद रहित जैली के रूप में परिवर्तित हो जाता है। इसके अलावा ईसबगोल में 14.7 प्रतिशत एक प्रकार का अम्लीय तेल होता है जिसमें खून के कोलेस्ट्रॉल को घटाने की क्षमता होती है।

आधुनिक चिकित्सा प्रणाली में भी दिनों–दिन ईसबगोल का महत्व बढ़ता जा रहा है। पाचन–तंत्र से सम्बन्धित रोगों की औषधियों में इसका इस्तेमाल हो रहा है। अतिसार, पेचिश जैसे उदर रोगों में ईसबगोल की भूसी का इस्तेमाल न केवल लाभप्रद है बल्कि यह पश्चातवर्ती दुष्प्रभावों से भी मुक्त है। भोजन में रेशेदार पदार्थों के अभाव के कारण कब्ज जैसी बीमारी हो जाना आजकल सामान्य बात है और अधिकांश लोग इससे पीड़ित हैं। आहार में रेशेदार पदार्थों की कमी को नियमित रूप से ईसबगोल की भूसी का सेवन कर दूर किया जा सकता है। यह पेट में पानी सोखकर फूलती है और आंतों में उपस्थित पदार्थों का आकार बढ़ाती है। इससे आंतें अधिक सक्रिय होकर कार्य करने लगती हैं और पचे हुए पदार्थों को आगे बढ़ाती हैं।

यह भूसी शरीर के टॉक्सिन्स और बैक्टीरिया को भी सोखकर शरीर से बाहर निकाल देती है।

ईसबगोल की भूसी तथा इसके बीज दोनों ही विभिन्न रोगों में एक प्रभावी औषधि का कार्य करते हैं। इसके बीजों को शीतल जल में भिगोकर उसके अवलेह को छानकर पीने से खूनी बवासीर में लाभ होता है। नाक से खून निकलने की स्थिति में ईसबगोल के बीजों को सिरके के साथ पीसकर कनपटी पर लेप करना चाहिए।

कब्ज के अतिरिक्त दस्त, आंव, पेटदर्द आदि में भी ईसबगोल की भूसी को दही के साथ लेना लाभप्रद रहता है। अत्यधिक कफ होने की स्थिति में ईसबगोल के बीजों का काढ़ा बनाकर रोगी को दिया जाता है।

ईसबगोल के बीजों का इस्तेमाल करने से पूर्व उन्हें भली प्रकार साफ कर लिया जाना चाहिए। तत्पश्चात् इन्हें धोकर सुखा लें। कब्ज होने पर रात्रि को सोते समय भूसी को दूध या पानी के साथ लिया जा सकता है अथवा एक कप पानी में एक तोला भूसी और कुछ शक्कर डालकर जैली तैयार कर लें तथा इसका सेवन करें।

सामान्यतः ईसबगोल की भूसी और बीजों का उपयोग रात में सोते समय किया जाता है किन्तु आवश्यकतानुसार इन्हें दिन में दो या तीन बार भी लिया जा सकता है। ◆

प्रस्तुति : विद्या प्रकाश

इस तरह बना रेनकोट

मानव सभ्यता की शुरूआत से ही बारिश से बचाव के लिए अनेक प्रयास किये जाते रहे हैं। मगर दुनिया का सर्वप्रथम वाटरप्रूफ रेनकोट सन् 1823 में ही बन सका। इसका आविष्कार चार्ल्स मैकिटोश ने किया था तथा यही वजह है कि दुनिया के अनेक हिस्सों में रेनकोट को मैक के नाम से भी जाना जाता है। उन्होंने सूती कपड़ों की दो परतों के मध्य रबर की परत डालकर वाटरप्रूफ कपड़ा तैयार किया। रेनकोट के इसी नमूने पर काम करते हुए ड्यूपाट कम्पनी ने आधुनिक रेनकोट तैयार किया जिसमें सूती कपड़ों के स्थान पर प्लास्टिक अथवा नायलॉन का इस्तेमाल किया जाने लगा। ◆

बाबा अवतार सिंह जी के अनमोल वचन

- यादे आप प्यार का बीज डालेंगे तो प्यार मिलेगा। यदि नफरत का बीज बोयेंगे तो नफरत मिलेगी।
- भक्त नदी और वृक्ष के समान सदैव दूसरों की सेवा के लिए जीवन जिया करते हैं।
- भक्त कभी भी स्वयं को गुरु से श्रेष्ठ नहीं मानता।
- सभी इन्सानों में प्रभु का नूर देखकर सभी से प्यार करो, सबके भले की कामना करो।
- परमात्मा सदैव एकरस है तथा इसे जानने से हमारे जीवन में भी एकरसता आ जाती है।
- सत्संग मन की खुराक है इसके बिना मन में कमजोरी आ जाती है। इसलिए आत्मिक शक्ति के लिए सत्संग जरूरी है।
- अपनी दृष्टि को ऐसा विशाल बनाओ जिससे दूसरों के दोष दिखाई न दें।
- भक्ति भगवान को जानकर भगवान की इच्छा में जीने का नाम है।
- यदि आप किसी सन्त महात्मा को सत्गुरु स्वरूप समझकर सेवा सम्मान करते हैं तो उसकी रसना से जो आशीर्वाद निकलता है, उसमें गुरु शामिल होता है।
- यदि आप दूसरों का उपकार नहीं कर सकते तो अपकार भी मत करो।
- सच्चा सेवक मन, वचन व कर्म में पवित्र और एक समान होता है।
- जिन्होंने निराकार परमात्मा को जान लिया है। उनके हृदय में करोड़ों सूर्यों का प्रकाश हो जाता है क्योंकि उन्हें यह समझ आ जाती है कि संसार की सब वस्तुएं नाशवान और अधूरी हैं।
- ज्ञान और जवाहरात को छिपाकर रखने से उसकी आभा नष्ट हो जाती है।
- दुख अज्ञानता का नाम है जैसे अंधेरा कोई चीज नहीं, इसी प्रकार दुख भी कोई चीज नहीं। प्रकाश हो तो अंधेरा और ज्ञान हो तो दुख नहीं होता।
- तन, मन, धन प्रभु की देन है। इसे प्रभु का ही समझो।
- प्रभु ज्ञान द्वारा ही निरंकार को जाना जा सकता है।
- सेवा हृदय और आत्मा को पवित्र करती है।
- जहाँ ईश्वर की चर्चा होती है वहीं स्वर्ग होता है।
- भक्त की पहली पहचान उसकी नम्रता है।
- – सत्गुरु ही ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग बतलाते हैं।
- सत्संग करने से अज्ञान का नाश होता है।
- दया की नींव को निकालकर इमारत टिक नहीं सकती।
- किसी से ईर्ष्या नहीं करनी बल्कि सभी से प्यार करना चाहिए।

निरंकारी राजमाता जी के अनमोल वचन

- सत्य केवल परमात्मा ही है।
- सदा सज्जनों की संगति करो।
- क्रोध मनुष्य को पशु बना देता है।
- ईश्वर और मनुष्य के बीच की कड़ी सत्गुरु है।
- आपस में मिल–बैठना, इन्सानों वाले कर्म करना, धर्म का पहला लक्षण है।
- सत्संग बड़े भाग्य से मिलता है। सत्संग का अर्थ होता है सत् का संग अर्थात् ईश्वर का संग।
- सन्तों की संगत से ही ब्रह्म की प्राप्ति होती है।
- आपस में मिल–बैठना, इन्सानों वाला कर्म करना, धर्म का पहला लक्षण है।
- चरित्र मनुष्य की सबसे बड़ी पूँजी है।
- प्यार, नम्रता, सत्कार जैसे दैवी गुण ही भक्तों को ऊँचाईयों की तरफ ले जाते हैं।
- मन की शान्ति के लिए, शान्ति के श्रोत प्रभु से जुड़ना जरूरी है।
- सुख अध्यात्म में है सांसारिक पदार्थों में नहीं।
- प्रभु का दान मिलता रहेगा तो यह मन शान्त रहेगा।

माता सविन्दर हरदेव जी के अनमोल वचन

- सत्संग एक ऐसा विद्यालय है जहाँ हम जीवन भर प्रीत, प्यार, नम्रता, एकत्व और सहनशीलता की शिक्षा प्राप्त करते रहते हैं।
- सन्त का जीवन एक महकदार फूल की तरह होता है जो हर जगह अपनी प्रेमाभक्ति की खुशबू फैलाता है और हर एक के जीवन को महकाता है।
- हमारा मिशन आध्यात्मिकता और ब्रह्मज्ञान का मिशन है और हमने इन्हीं बातों को पहल देकर मिशन को आगे बढ़ाना है।
- महापुरुष हमेशा ही रोशनी फैलाने वाले होते हैं। वे इस निराकार–प्रभु परमात्मा की रोशनी फैलाते हैं क्योंकि वह जानते हैं कि अंधकार से ठोकरें मिलती हैं और जिस व्यक्ति को ये ज्ञान की रोशनी मिल जाती है उसके जीवन में अंधेरा खत्म हो जाता है।
- हम अकेले उतने मजबूत नहीं होते, जितना हम मिल–जुलकर मजबूत हो जाते हैं।

वर्षा की एक बूँद

बोधकथा : महेन्द्र सिंह

वह निराश बैठा था और बरसते हुए बादलों को देख रहा था। सहसा उसे लगा कि वर्षा की एक बूँद उससे कुछ कह रही है– ''तुम निराश क्यों बैठे हो?'' निराश बैठने से कभी अपनी मंजिल नहीं मिलती है। मंजिल तो मेहनत करने और निरन्तर आगे बढ़ने से मिलती है, उठो और आगे बढ़ो... और बढ़ते ही रहो, जिस प्रकार मैं बढ़ती हूँ मेरी तरह तुम भी गतिशील बनो, फिर देखो, एक न एक दिन तुम्हें अपनी मंजिल मिल ही जायेगी और तुम अपनी मंजिल को प्राप्त कर लोगे। तुम्हारा परिश्रम व्यर्थ नहीं जायेगा।

दो पल वह उस वर्षा की बूँद को देखता रहा, फिर देखते ही देखते वर्षा की वह बूँद आगे बढ़ते हुए उसकी आँखों से ओझल हो गई थी।

अगले ही पल वह उठ खड़ा हुआ और अपनी मंजिल की ओर बढ़ गया। वर्षा की एक बूँद ने उसके निराश जीवन में उत्साह और उमंग की नई किरण का संचार कर दिया था। अब वह निरन्तर आगे बढ़ता ही चला जा रहा था...।

वर्षा की एक बूँद ने अब उसके जीवन को बदल दिया था।

मातृभूमि प्रेम

प्रेरक–प्रसंग : रूपनारायण काबरा

जापान का एक चित्रकार भगवान बुद्ध के जीवन के अनूठे प्रसंगों को अपनी तूलिका से चित्रित करने के उद्देश्य से सारनाथ आया हुआ था। वह बुद्ध के प्रसंगों को दीवारों पर अंकित करने के कार्य में दिन–भर मनोयोग से जुटा रहता। रात के समय बटलोई में कुछ चावल, दाल और आलू डालकर अपने लिये खिचड़ी बना लेता।

एक दिन एक बौद्ध भिक्षु ने उसे एक डिब्बे में से चावल के कुछ दाने निकालकर बाकी चावलों में मिलाते हुए देखा। उसने पूछा, 'क्या चावल के इन दानों में कोई विशेषता है जो तुमने डिब्बे में से निकालकर मिलाये?'

चित्रकार ने उत्तर दिया, 'बंधु, चावल के ये दाने मेरे देश जापान के हैं, वहाँ उपजे हैं। मैं इन्हें मातृभूमि का पवित्र प्रसाद मानकर प्रतिदिन अपने भोजन में मिला लेता हूँ। इस माध्यम से मैं अपनी मातृभूमि से जुड़ा महसूस करता हूँ।

बौद्ध भिक्षु जापानी चित्रकार का मातृभूमि प्रेम देखकर चकित रह गया। ◆

आजादी हमने पाई है

बाल कविता : रामअवध राम

बड़ी मुश्किलों से बच्चों,
आजादी हमने पाई है।
रखना संभाल कर इसको,
स्वतंत्रता सुखदाई है।।

कितने ही वीरों ने इसके लिए,
अपनी जान गंवाई है।
उनकी ही कुर्बानी,
देखो आज रंग लाई है।।

बापू सुभाष जवाहर के,
मेहनत की कमाई है।
नाम हमारे कर आजादी,
दुनिया से ली विदाई है।।

भारत वतन

बाल कविता : गोविन्द भारद्वाज

प्यारी धरती प्यारा गगन है।
सबसे अच्छा भारत वतन है।

बहती जहाँ है पावन नदियां,
लहराता है जहाँ तिरंगा।
अलग भाषाएं प्रांत अलग हैं,
फिर भी अपना देश सुरंगा।।

सुन्दर फूलों का यह चमन है,
सबसे अच्छा भारत वतन है।
देवों की ये अद्भुत भूमि,
देख इसे हर घाटी झूमी।।

खड़ा हिमालय बनकर प्रहरी,
सागर ने तट–माटी चूमी।
नये युग का नया सपन है,
सबसे अच्छा भारत वतन है।।

पिंकी बदल गयी

बाल कहानी : सुरेश सौरभ

पिंकी का परिवार गरीब था। उसके पापा मजदूरी करते थे।

पिंकी सरकारी स्कूल में रोज पढ़ने जाती। वह कक्षा आठ की छात्रा थी। वह खूब मन लगाकर पढ़ती। उसके पापा पिंकी को स्कूल जाने के लिए दस रुपये देते थे।

पिंकी दस रुपये रोज चटकर जाती। बस कुछ चटर–पटर में सारे पैसे उड़ जाते।

एक रोज पिंकी के पेट में तेज दर्द हुआ। उसके मम्मी–पापा उसे नजदीकी अस्पताल लेकर गये। डॉक्टर ने कहा– पिंकी की हालत खराब है। इसे भर्ती कराना पड़ेगा। मजबूरन उसे भर्ती करना पड़ा। डॉक्टर ने पिंकी की जाँचें कीं। तब डॉक्टर बोले– पिंकी के पेट में इन्फेक्शन हुआ है।

पिंकी के पापा तब हैरानी से बोले– यह कैसे हुआ डॉक्टर साहब?

डॉक्टर बोले– बाहर के बने मसाले वाले तमाम चटपटे आइटम खाने से।

यह सुन पापा ने पिंकी की ओर हैरानी से देखा तो पिंकी ने आँसू बहाते हुए कहा– सॉरी पापा।

जब वहाँ से डॉक्टर चले गये तो पिंकी को डांटते हुए कहा– ''मैं इस लड़की को हमेशा समझाती थी कि बेटी बाहर की चटर–पटर चीजें न खा। पर यह शैतान लड़की कभी न मानती थी। एक तो गरीबी में घर चलाना मुश्किल, अब इसके इलाज का पैसा कहाँ से हम लेकर आएँ।'' सिर पर हाथ रखकर मम्मी सोच में बैठ गयीं।

पापा बोले– कर्जा लेना ही पड़ेगा।

अब पिंकी से रहा न गया। वह रोते हुए बोली– ''पापा मैं कान पकड़कर कसम खाती हूँ कि अब कभी बाहर की चटपटी चीजें नहीं खाऊँगी। आप जो पैसे देते हैं, उन्हें अपनी गुल्लक में अब रोज जोड़ूँगी और इकट्ठा करके अपनी दवाई का कर्जा उतार दूँगी।'' फिर संयत होकर बोली– ''मैं जब बड़ी हो जाऊँगी पापा तो कम्पीटीशन की खूब तैयारी करके नौकरी पा जाऊँगी। फिर सारा कर्जा चुका दूँगी। ये मेरा पक्का वादा रहा। मैं खूब मन लगाकर पढ़ाई करूँगी, पर पापा प्लीज इस बार मुझे माफ कर दें।''

मम्मी–पापा उसकी निश्छल मन की बातों को सुनकर बेहद भावुक हो गये। दोनों की आँखें नम हो गयीं। अपनी बेटी को गले लगाकर कहा– मेरी बेटी सबसे प्यारी। सबसे अच्छी। ◆

अपनाने योग्य बातें

- तीन के लिए मर मिटो – देश, सद्धर्म, मित्र।
- तीन बातें मत भूलो – सद्उपदेश, उदारता, उपकार।
- तीन का संग्रह करो – अच्छी पुस्तकें, अच्छे मित्र, अच्छे कार्य।
- तीन का सामना करो – शत्रु, अत्याचार, संकट।
- तीन से हमेशा दूर रहो – आलस्य, खुशामद, बकवास।

अजब अनोखे मेढक

जानकारीपूर्ण लेख : किरण बाला

बारिश की शुरुआत होते ही मेढकों की टर्र–टर्र की आवाज चारों ओर सुनाई देती है। आपने अपनी गली–मोहल्लों और बाग–बगीचों में उछलते–कूदते मेढकों को तो देखा होगा लेकिन यहाँ हम आपको ऐसे मेढकों के बारे में बता रहे हैं जो वाकई अजब अनोखे हैं।

विश्व का सबसे बड़ा या विशालकाय मेढक गोलियमथ है। यह कैमरून और भूमध्यवर्ती गिलिय में पाया जाता है। सन् 1989 में पकड़े गये एक नमूने की थूथनी से निकास की लम्बाई 14 इंच तथा पैर फैलाने पर साढ़े 34 इंच थी। इस मेढक का वजन 3.66 किलोग्राम था।

मेढकों की समस्त प्रजातियों में काँच मेढक सर्वाधिक अद्‌भुत तथा सुन्दर होता है। इसकी त्वचा पूर्णतः पारदर्शी होती है। जिसकी वजह से बाहर से ही उसके शरीर के भीतर के सभी अंग स्पष्ट दिखाई देते हैं। यहाँ तक कि टांगों की भीतरी हड्डियां शिराओं और धमनियों में दौड़ता रक्त भी साफ दिखाई देता है। सेंट्रोलेनिडे परिवार की यह प्रजाति वृक्षों पर रहती है। इनके पैर गद्‌देदार तथा चिपकने वाले होते हैं। इससे ये मेढक बड़ी आसानी से एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर कूद सकते हैं।

पक्षियों को तो घोसला बनाते देखा है पर शायद आप नहीं जानते कि मेढकों की कुछ प्रजातियां रहने के लिए घोसले भी बनाती हैं। ये घोसले पेड़ों पर बनाये जाते हैं। घोसला बनाने में यह तिनकों का इस्तेमाल करते हैं। यहीं पर मादा अंडे देती है तथा बच्चे विकसित होते हैं।

विश्व का सबसे जहरीला मेढक बेटराचोटोक्सिन है। इस मेढक की खोज 1973 में कोलोम्बिया में हुई। इसकी त्वचा से फिलाबेट्स टेरी बिलेस नामक विष का स्राव होता है। यह विष किसी भी विष से 20 गुना अधिक जहरीला होता है। एक मेढक 1500 लोगों की जान लेने के लिए पर्याप्त है। इसे पकड़ने के लिए मोटे दस्ताने पहनने पड़ते हैं।

एरो पाइसन प्रजाति मेढक की त्वचा इतनी जहरीली होती है कि लोग शिकार के समय अपने तीरों पर इसके विष का इस्तेमाल करते हैं।

मेढक के अंडे टेडपोल में बदलते हैं जो कि पूरे मेढक के रूप में परिवर्तित होते हैं लेकिन पैराडाक्सिल फ्रॉग का टेडपोल बढ़कर मेढक नहीं बनता अपितु सिकुड़कर अपने से एक चौथाई आकार में मेढक में बदल जाता है। ◆

कविता : डॉ. परशुराम शुक्ल

हॉकी का जादूगर

आओ बच्चों आज हम सभी,
ध्यानचन्द को जानें।
हॉकी के इस जादूगर को,
कविता से पहचानें।।

सन् उन्नीस सौ पाँच देश ने,
एक रतन धन पाया।
जिसने हॉकी में भारत का,
जग में ध्वज फहराया।।

सेना का छोटा सा सैनिक,
दृढ़ इच्छाओं वाला।
कर न सका जो कोई अब तक,
ऐसा कुछ कर डाला।।

लेकर हॉकी गया जर्मनी,
आस्ट्रेलिया आया।
और पहुँच अमरीका उसने,
अपना खेल दिखाया।।

सारे जग में धूम मच गई,
ओलम्पिक भी जीते।
हॉकी वाले उसके आगे,
सारे पानी पीते।।

बर्लिन ओलम्पिक में उसको,
हिटलर ने पहचाना।
बोला सैनिक ध्यानचंद से,
पास हमारे आना।।

खेल तुम्हारा सबसे अच्छा,
अपना नाम बताओ।
फील्डमार्शल तुम्हें बनाऊँ,
तुम जर्मन आ जाओ।।

सारे जग में इसी तरह से,
उसने धूम मचायी।
तुम भी ऐसे बनो जहाँ में,
बात समझ में आयी।

तीन दिसम्बर सन् उन्यासी,
को वह स्वर्ग सिधारा।
मैंने भी अपने कंधों का,
उसको दिया सहारा।।

ध्यानचंद का बच्चों से था,
अपनेपन का नाता।
जन्मदिवस उसका ही बच्चों,
खेल दिवस कहलाता।।

कर्म ही है जीवन का आधार

कहानी : सीताराम गुप्ता

आकाश में घने बादल छाए हुए थे। रिमझिम–रिमझिम बूँदें पड़ रही थीं। ऐसे में जंगल में एक मोर आनंदित होकर नृत्य कर रहा था। उसके खूबसूरत पंख इंद्रधनुषी छटा बिखेर रहे थे। वहाँ से गुजरने वाला एक व्यक्ति रूककर यह सुन्दर दृश्य देखने लगा। तभी अचानक मोर की नज़र उस व्यक्ति पर पड़ी। उस व्यक्ति के हाथ में एक थैला था। मोर ने पूछा कि तुम कहाँ जा रहे हो और तुम्हारे हाथ में ये क्या है?

व्यक्ति ने कहा कि मैं बाजार जा रहा हूँ और मेरे हाथ में जो थैला है उसमें अनाज भरा हुआ है। मैं ये अनाज बेचकर एक सुन्दर–सा पंख खरीदकर लाऊँगा और उससे अपना घर सजाऊँगां

यह सुनकर मोर बोला, ''देखो मेरे पंख भी बहुत सुन्दर हैं। मुझे खाने की तलाश में दिनभर इधर–उधर भटकना पड़ता है। यदि तुम मुझे अनाज दे दो तो मैं तुम्हें अपना खूबसूरत पंख दे दूँगा।'' व्यक्ति को ये सौदा पसंद आया। उसने अनाज मोर को दे दिया और पंख लेकर खुशी–खुशी अपने घर चला गया।

अब तो वह व्यक्ति रोज–रोज ही अनाज लेकर मोर के पास आता और अनाज के बदले में पंख लेकर खुशी–खुशी अपने घर चला जाता। मोर भी बहुत खुश रहने लगा। अब उसे खाने की तलाश में दिनभर इधर–उधर भटकना नहीं पड़ता था। दिनभर अपनी चोंच से अनाज के दाने चुगता रहता और आराम से पड़ा रहता। धीरे–धीरे उसके पंख कम होने लगे और एक दिन उसके सारे पंख ही समाप्त हो गए। जब पंख समाप्त हो गए तो उस व्यक्ति ने अनाज लेकर आना भी छोड़ दिया। एक दिन मोर का भी सारा अनाज समाप्त हो गया जो उस

व्यक्ति द्वारा दिया गया था। अब मोर को भूख लगी तो उसने फैसला किया कि कहीं आसपास जाकर दाना–दुनका जुटाता हूँ। मोर ने उड़ने का प्रयास किया लेकिन वो तो उड़ ही नहीं पा रहा था। उड़े भी तो कैसे? अब उसके पास एक पंख भी तो नहीं बचा था। उसने अपने शरीर पर एक नजर डाली तो पाया कि पंखों के बिना वह कितना बदसूरत लग रहा है। एक ही जगह पड़े–पड़े और आराम से सारे दिन खाते रहने की वजह से उसका शरीर भी भारी और थुलथुल हो गया था।

मोर ने घर बैठे दानों के लालच में अपनी सुन्दरता ही नहीं अपनी उड़ने की क्षमता को भी बेच दिया था और साथ ही अपनी चंचलता व कर्मशीलता से भी हाथ धो बैठा था। वह प्रायः भूखा–प्यासा पड़ा रहता। उसका नाच भी बंद हो गया था क्योंकि न तो उसके पास पंख थे और न ही नाचने की शक्ति ही उसमें शेष बची थी। अपनी इस स्थिति के कारण वह बहुत दुखी रहने लगा। अपमान, अभाव व अशक्तता के कारण जल्दी ही वह मौत के मुख में समा गया।

उसके साथ ऐसा क्यों हुआ? उसके साथ ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि उसने कर्म करना छोड़ दिया था। मोर की सुन्दरता व उसके जीवन का आधार उसके पंखों व उसके नृत्य में है, आरामपरस्ती में नहीं। मनुष्य ही नहीं हर प्राणी के लिए कर्म करना आनिवार्य है। जब भी हम अपना स्वाभाविक कर्म व कर्तव्य का पालन करना छोड़ देते हैं हमारी दुर्गति ही होती है। हम इतने बड़े लालची न बनें कि अपना सौंदर्य, अपनी कला, अपनी योग्यता अथवा अपनी नैतिकता ही किसी लालच के वशीभूत होकर खो बैठें। कर्म द्वारा हम न केवल आसानी से अपनी आजीविका ही कमा सकते हैं अपितु स्वस्थ और रोगमुक्त भी बने रहते हैं। इसलिए सुविधा नहीं, कर्म ही है जीवन का वास्तविक आधार। ◆

प्रेरक–प्रसंग

परोपकार

एक मुसफिर राह में जा रहा था। आगे जाने पर उसे एक फलदार वृक्ष मिला। फल देखकर मुसाफिर के मन में लालच आया। उसने पत्थर उठाया और वृक्ष पर दे मारा। दो–चार फल गिरे मुसाफिर ने फल उठाये और चलते बना। मुसाफिर की इस हरकत को आकाश देख रहा था। उसने वृक्ष से पूछा, ''कहो भाई वृक्ष, वह मुसाफिर आया और तुम्हारे ऊपर पत्थर मारा। तूने उसे फल दिया और वह चला गया। तूने उसे कुछ नहीं कहा।'' तब वृक्ष ने कहा, ''देखो भाई आकाश; आदमी अपना धर्म भले ही छोड़ दे लेकिन मैं क्यों छोड़ू, मैं तो परोपकार के लिए ही बना हूँ।''

प्रस्तुति : रामअवध राम

आओ तुम्हें बतायें

- हाथी के दाँत उसके जीवन में 6 बार निकलते हैं।
- खटमल तीन वर्षों तक बिना भोजन किए जीवित रह सकता है।
- संसार में तितली ही एक ऐसा जीव है जिसकी स्वाद ग्रंथि उसके पिछले पैरों में होती है।
- मधुमक्खी को एक पौंड शहद बनाने के लिए 20 लाख फूलों से पराग एकत्र करना होता है।

प्रस्तुति : विभा वर्मा

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन : पिंकी

मैंने नीम का पौधा लिया है, यह बहुत ही गुणकारी होता है।
हाँ, माँ ने मुझे बताया था कि नीम, तुलसी, एलोवेरा यह सब पौधे औषधि वाले होते हैं।

अरे चींटू, यह तुम्हारे हाथ में कौन–सा पौधा है?
मैं तो गुलाब का पौधा लाया हूँ।

यह तुमने क्या किया? किट्टी।

मेरा पौधा सबसे अच्छा है। इसलिए मैंने तुम्हारा पौधा तोड़ दिया।
तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था, किट्टी।

4+1=5
3+5
सभी बच्चे पौधे लाए हैं?
जी टीचर जी।

किट्टी, तुम्हारा पौधा कहाँ है?
4+1=5
3+5=8
टीचर, मैं तुलसी का पौधा लाई हूँ। जो बहुत ही उपयोगी है।

4+1=5
3+5=8
अरे! चींटू, तुम्हारा पौधा कहाँ है?
टीचर, मेरा पौधा किट्टी ने तोड़ दिया।
किट्टी, तुमने ऐसा क्यों किया?
मेरा पौधा औषधि वाला है और वह सबसे अच्छा है इसलिए मैंने चींटू का पौधा तोड़ दिया।
सभी पौधे उपयोगी होते हैं। सभी पौधों के अपने–अपने कार्य होते हैं। यदि कोई पौधा हमें फल या फूल नहीं देता तो वह हमें ऑक्सीजन तो प्रदान करता है। समझ में आई बात, किट्टी।
जी टीचर जी, मुझे माफ कर दीजिए। अब मैं ऐसा नहीं करूँगी।

छोड़ दो मुझे...

बाल कथा : दिनेश दर्पण

घर की खिड़की पर एक पिंजरा रखा था। देखने में तो वह साधारण–सा ही पिंजरा था, पर जब उसमें किसी पंछी को बंद किया जाता तो वह उसको छोड़ देता था यानी मुक्त आकाश में उड़ा देता था। सुबह–सुबह मुँह–अंधेरे जब सब लोग सोये रहते तब पिंजरा और खिड़की (पिंजरे की छोटी–सी खिड़की) खुल जाती, पिंजरा भी अपने तार चौड़े कर देता और पंछी फुर्र से खुले आसमान में उड़ जाता था।

एक बार एक तोते को उसमें रखा गया। सुबह–सुबह हमेशा की तरह पिंजरे में हरकत हुई। पिंजरे ने अपने तार फैला दिये मगर तोता तो हमेशा की तरह 'घोड़े बेचकर' गहरी नींद में सो रहा था।

–अरे उठ! उड़ जा सुबह हो गई।– पिंजरे ने तोते से कहा।

–क्यों आप मुझे क्यों भगा रहे हो?– तोते ने पिंजरे से पूछा।

–उड़ जा! और आजादी से जीवन जी। पिंजरे ने पुनः तोते से कहा।

–हूँ! आजादी से जिऊँ? क्यों जी मुझे वहाँ खाने को कौन देगा? जमीन पर पड़े टुकड़े बटोरता फिरूंगा क्या?– तोता बोला।

–पर अभी तो तू कैद में है।– पिंजरे ने कहा।

–तो क्या हुआ?– तोते ने उत्तर दिया।

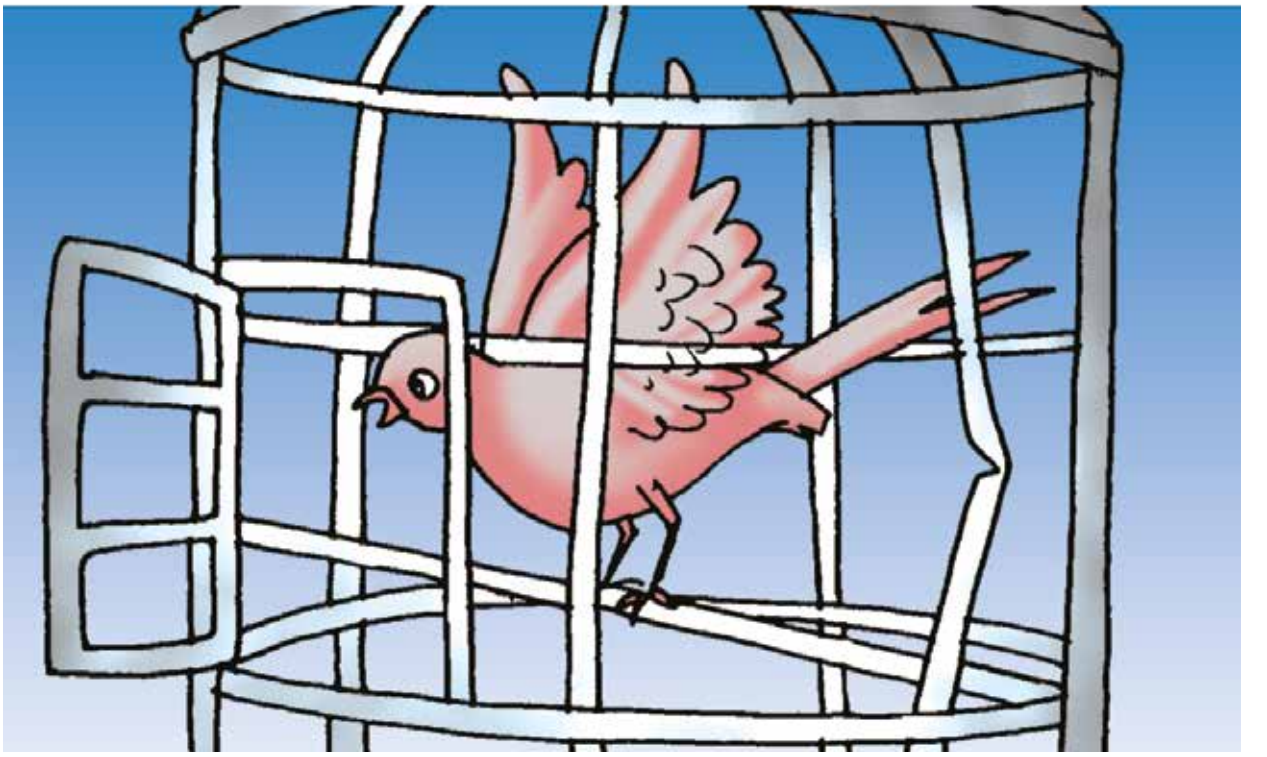

–तुम्हारी समझ में कुछ आया?– पिंजरे ने अपनी ताक (पिंजरे की छोटी–सी खिड़की) से पूछा।

–मुझे लगता है, यह तोता बहुत अक्लमंद है।– ताक ने जवाब दिया। दिन बीतने लगे। तोता चैन से जी रहा था। पर पिंजरा हमेशा इसी सोच–विचार में उलझा रहता था कि क्या मैं बेकार (व्यर्थ) में ही पंछियों को छोड़ता रहता था? क्या उनके लिए आजादी से जीना ज्यादा मुश्किल है। उसे ये सवाल हमेशा कुरेदता रहता था।

फिर एक दिन तोता किसी दूसरे आदमी को दे दिया गया और खाली हुए उस पिंजरे में एक गौरैया को बंद कर दिया गया।

–शैतान कहीं के! छोड़ मुझे।– दरवाजा (ताक) बंद होते ही गौरैया चिल्लाने लगी।

पिंजरा उसे समझाने लगा– अरे सब्र कर (धैर्य रख) पगली। यहाँ तुझे दाना–पानी मिलेगा।

पर गौरैया तो कुछ सुनना ही नहीं चाहती थी। उसने तो बस ''छोड़ दो मुझे.छोड़ दो मुझे...'' की ही रट लगा रखी थी।

–अब तुम्हारी समझ में कुछ आया।– पिंजरे ने खिड़की से पूछा।

–मुझे लगता है यह गौरैया बहुत अक्लमंद नहीं है।– खिड़की ने खुलते हुए कहा।

पिंजरे ने एक गहरी सांस लेकर तार फैला दिये। गौरैया खुशी से चहचहायी और पलक झपकते ही खिड़की से बाहर निकल गई और फुर्र्र से अपने पंख फैलाकर मुक्त गगन में उड़ गई।

–थोड़ी देर बाद पिंजरे ने खिड़की से कहा– पता नहीं क्यों गौरैया जो बहुत देर तो नहीं रही थी, फिर भी मुझे अच्छी लगने लगी थी।

खिड़की ने जवाब दिया– हाँ! मुझे भी।

गुलाम की तरह पिंजरे में बंद रहने वालों को आजादी की जिन्दगी क्या होती है। वे क्या जानें। ◆

कभी न भूलो

❖ प्रत्येक कर्तव्य पवित्र है। समर्पित भावना से किया गया कर्तव्य ईश्वर की सर्वोच्च उपासना है।

– स्वामी विवेकानन्द

❖ नम्रता दिखाते समय हम महान व्यक्तियों के समकक्ष हो जाते हैं।

– रवीन्द्रनाथ ठाकुर

❖ विनम्रता से श्रेष्ठ कोई अस्त्र नहीं है।

– सूक्ति

❖ सज्जनों के सत्संग में ही जंग खायी बुद्धि तेज होती है। वाणी से सत्य की वर्षा होती है। उन्नत गौरव प्राप्त होता है। पाप मिट जाते हैं। मन शान्त होता है।

– नीति शतक

❖ जब अपने दोष दिखने लगते हैं तभी से उत्कर्ष का आरम्भ होता है।

– रामकृष्ण परमहंस

❖ हमारे विचार सब ओर से कल्याणकारी हों।

– ऋग्वेद

❖ अपने कर्तव्य का निष्ठापूर्वक पालन न करना देशद्रोह होता है और अपने को धोखा देना भी।

– अमरवाणी

❖ जिस क्षण तुम इच्छा से ऊपर उठ जाओगे, इच्छित वस्तु तुम्हारी तलाश करने लगेगी, यही नियति है।

– स्वामी रामतीर्थ

❖ हम शिकायत कर सकते हैं कि गुलाब के पौधे में काँटे हैं या खुशी प्रकट कर सकते हैं कि काँटों के पौधे में भी फूल हैं।

– अब्राहम लिंकन

❖ सफलता की कुंजी बेहद आसान है। सही काम, सही ढंग से सही वक्त पर करें।

– अर्नोल्ड एच. ग्लासगो

❖ आशा उत्साह की जननी है। इसमें तेज, बल और जीवन है। आशा संसार की संचालक शक्ति है।

– प्रेमचन्द

❖ इस दुनिया में जो कुछ हम अर्जित करते हैं उससे नहीं बल्कि जो कुछ त्याग करते हैं, उससे समृद्ध बनते हैं।

– हेनरी वार्ड बीचर

❖ सफलता की खुशी मानना अच्छा है, पर उससे जरूरी है अपनी असफलता से सीख लेना।

– बिल गेट्स

❖ आपकी वजह से किसी एक व्यक्ति की जिंदगी भी आसान हुई तो वह सफलता है।

– एमर्सन

❖ गुणवता कोई अचानक प्राप्त होने वाली वस्तु नहीं है। यह तो हमेशा से समझदारी से किए गए प्रयासों का परिणाम है।

– आर्नोल्ड पामर

❖ द्वेष द्वेषी व्यक्ति को ही खा जाता है।

– तुलसीदास

❖ विफलता वह मौका है जब आप अपनी योग्यता को अधिक बुद्धिमानी से परख सकते हैं।

– हेनरी फोर्ड

आजादी का बिगुल

बाल गीत : डॉ. ममता खत्री

आजादी का बिगुल बजा जब,
चमका गगन में तारा था।
हुआ अचम्भित सकल विश्व,
वह भारतवर्ष हमारा था।।

सुनी कहानी आजादी की,
हमने अपनी नानी से।
देश की सत्ता पाई हमने,
वीरों की कुर्बानी से।।

देश हो गैरों की मुट्ठी में,
हमको नहीं गंवारा था।
हुआ अचम्भित सकल विश्व,
वह भारतवर्ष हमारा था।।

बनते ही गणतंत्र देश का,
विश्व में ऊँचा नाम हुआ।
छंटा अंधेरा, निकला सूरज,
पूरा हर अरमान हुआ।।

शत्–शत् नमन वीरों को,
जिनके लहु ने इसे संवारा था।
हुआ अचम्भित सकल विश्व,
वह भारतवर्ष हमारा था।।

हम हैं चाहे नन्हें–मुन्ने,
सपने लेकिन हैं बड़े–बड़े।
तेरी रक्षा सदा करेंगे,
भारत माँ हम खड़े–खड़े।।

तीन रंगों का बना तिरंगा,
निर्मल गंगा की धारा।
इस पर सारे मुग्ध भारतवंशी,
सबकी आँखों का तारा।।

लहराएगा सदा तिरंगा,
यही संकल्प हमारा था।
हुआ अचम्भित सकल,
विश्व वह भारतवर्ष हमारा था।।

सुधर गया कालू

बाल कथा : महेन्द्र सिंह शेखावत

कालू आठवीं कक्षा में पढ़ता था। वह बहुत आलसी था। पढ़ाई में उसका मन नहीं लगता था। इसलिए वह स्कूल भी कम ही जाया करता था। कालू की माँ घर में ही रहती थी। कालू के पिताजी एक कारखाने में काम करते थे। वे सुबह जल्दी जाया करते थे और सायंकाल देरी से घर लौटते थे।

कालू प्रतिदिन घर से अपना थैला लेकर स्कूल के लिए निकलता था लेकिन वह स्कूल में न जाकर दिनभर इधर–उधर भटकता रहता था और स्कूल की छुट्टी के समय घर आ जाया करता था। कालू के माता–पिता सोचते थे कि उनका बेटा कालू नियमित स्कूल जा रहा है।

स्कूल से नाम कटने के डर से कालू कभी–कभी स्कूल भी चले जाया करता था जिसके कारण स्कूल से उसका नाम नहीं काटा जाता था। जब अध्यापक उससे पूछते कि वह इतने दिन अनुपस्थित क्यों रहा तो वह बड़े दुःखी मन से कह देता था, गुरुजी, मेरी मम्मी बीमार है। कभी वह कह देता– मेरे पापा बीमार हैं, तो कभी कह देता– घर पर काम हो गया था।

इस प्रकार उसने लगभग पूरा वर्ष गुजार दिया।

अपने आलस और लापरवाही के कारण परीक्षा में उसके पेपर भी अच्छे नहीं हुए। परिणामस्वरूप वह परीक्षा में फेल हो गया।

जब कालू के पिताजी को यह मालूम हुआ तो उन्हें बहुत दुःख हुआ। वह कितनी मेहनत से एक–एक पैसा बचाकर और अपना पेट काटकर अपने लाड़ले को पढ़ा रहे थे और उससे कितनी आशा लेकर चल रहे थे लेकिन....!

कालू ने कभी इस ओर ध्यान दिया ही नहीं था।

कालू के पिताजी सोचने लगे कि उनका लाड़ला प्रतिदिन स्कूल जाता है। घर पर भी उससे अधिक काम नहीं करवाते, फिर वह फेल कैसे हो गया। यह जानने के लिए वे एक दिन स्कूल में आकर प्रधानाध्यापक महोदय से कालू के विषय में पूछने लगे।

जब प्रधानाध्यापक महोदय ने उन्हें कालू के विषय में यह बताया कि वह स्कूल में नियमित रूप से नहीं आता है इसलिए फेल हुआ है तो उन्हें बहुत दुःख हुआ। उन्होंने प्रधानाध्यापक महोदय को बताया कि वह तो घर से प्रतिदिन स्कूल आता है। तब प्रधानाध्यापक महोदय ने कालू को उसकी कक्षा से बुलवाया और उसे धमकाया। फिर उसे समझाते हुए बोले– 'देखो बेटा! तुम हमेशा झूठ बोल–बोलकर स्कूल नहीं आये। इसमें नुकसान किसका हुआ? इससे तुमने अपने जीवन का बहुमूल्य एक वर्ष गंवा दिया है और तुम्हारे पिताजी के खून–पसीने की कमाई भी गंवाई है। बताओ इससे तुम्हें क्या लाभ हुआ? यह बुरी बात है। ऐसी बुरी आदत किसी भी विद्यार्थी को शोभा नहीं देती क्योंकि इसका परिणाम सर्वदा हानिकारक ही होता है। यदि तुम स्कूल नियमित रूप से आते और अच्छी मेहनत करके पढ़ाई करते तो तुम फेल नहीं होते और तुम अच्छे अंकों से पास होकर आगे की कक्षा में चले जाते तो तुम्हारा एक वर्ष बेकार नहीं होता और तुम्हारे पिताजी की मेहनत की कमाई भी बेकार नहीं जाती। अब तुम्हें पुनः एक वर्ष इसी कक्षा में पढ़ना होगा और तुम्हारे पिताजी को उतना ही पैसा और लगाना पड़ेगा तुम्हारी एक ही कक्षा के लिए ...।

यह सुनकर कालू को अपनी गलती का आभास हो गया। अब वह मन ही मन पछताने लगा– काश! मैं नियमित स्कूल आता और मन लगाकर पढ़ाई करता तो आज फेल नहीं होता और आगे की कक्षा में चला जाता। अब मुझे एक वर्ष फिर इसी कक्षा में पढ़ना पड़ेगा। सोचते–सोचते उसने मन ही मन दृढ़ निश्चय किया कि अब वह ऐसी गलती नहीं करेगा और आगे मन लगाकर पढ़ाई करेगा। फिर उसने प्रधानाध्यापक महोदय एवं अपने पिताजी से क्षमा मांगी और भविष्य में कभी ऐसी गलती नहीं करने का प्रण किया।

इसके बाद कालू ने कभी ऐसी गलती नहीं की और आगे नियमित रूप से वह अच्छी मेहनत करते हुए सभी कक्षाओं में अच्छे अंकों से पास होने लगा।

अब उसके माता–पिता और अध्यापक खुश थे। ◆

विज्ञान–वार्ता

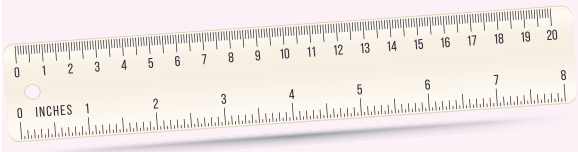

डेसीमीटर

एक कमरे में विज्ञान से संबंधित कुछ उपकरण रखे हुए थे। वे एक–दूसरे के बहुत करीब थे। अतएव उनमें परस्पर विज्ञान–वार्ता शुरू हो गयी।

पहले थर्मामीटर बोला, ''मैं किसी मनुष्य के शरीर का तापक्रम आसानी से बता सकता हूँ।''

''दूध का घनत्व बताने की क्षमता मुझमें है,'' यह लैक्टोमीटर की आवाज थी। वह आगे बोला, ''यही नहीं, उसकी शुद्धता–अशुद्धता की परख भी मुझे है।''

अब बैरोमीटर की बारी आयी। उसने भी झट कहा, ''किसी भी स्थान पर हवा का क्या दबाव है, मुझसे पूछो। तुरंत बता दूंगा।''

तभी तीनों की बातें सुनकर कमरे के एक कोने में पड़ा लकड़ी का बना एक नन्हा–सा पैमाना अपने को रोक नहीं सका। वह भी टपक पड़ा, ''अरे, आप तीनों एक–दूसरे से कितनी दूरी पर हो, यह बताना मेरा काम है।''

''तुम हो कौन?'' तीनों की निगाहें एकाएक उस पैमाने की ओर दौड़ गयी।

अपनी नन्हीं आवाज में वह झट बोला, ''मैं हूँ– डेसीमीटर।''

प्रस्तुति : राधेलाल 'नवचक्र'

पढ़ो और हँसो

बच्चा पसीने से भीगा हुआ घर पहुँचा तो कमरे के अन्दर आने की बजाय बाहर धूप में खड़ा हो गया तो माँ ने पूछा– बेटा, तुम धूप में क्यों खड़े हो?

बच्चा बोला– माँ मैं अपना पसीना सुखा रहा हूँ।

होटल मैनेजर : जनाब! मैंने आपसे कह दिया कि हमारे यहाँ कोई कमरा खाली नहीं है। आप जा सकते हैं।

परेशान यात्री : यदि प्रधानमंत्री जी आ जाएं तो तुम उन्हें कमरा दे दोगे?

मैनेजर : क्यों नहीं।

यात्री : तो फिर मुझे उनका कमरा दे दो वह नहीं आ रहे।

एक चींटी तेजी से दौड़ती हुई अस्पताल की ओर जा रही थी।

दूसरी चींटी ने उससे पूछा– बहन! इतनी तेजी से कहाँ भागी जा रही हो?

पहली चींटी बोली– हाथी का 'एक्सीडेंट' हो गया है उसे खून की जरूरत है, खून देने जा रही हूँ।

दीपा : (पापा से) पापा, एक आदमी बहुत देर से दस रुपये मांग रहा है?

पापा : दस रुपये? लेकिन वो दस रुपये क्यों मांग रहा है?

दीपा : वह कह रहा है– दस रुपये दो और कुल्फी लो।

थानेदार : (चोर से) तुमने चोरी क्यों की?

चोर : क्यों न करता सर।

थानेदार : इसका क्या मतलब है?

चोर : सर दरवाजे के बाहर लिखा था– 'शुभ स्वागतम्'।

एक नेता : (अपने साथियों से) हमें कभी भी पीछे नहीं हटना चाहिए।

नेता : (दूसरे दिन अपने एक साथी से) क्यों चिपककर खड़े हो, जरा पीछे हटो।

साथी : नहीं।

नेता : क्यों नहीं?

साथी : आप ही ने तो कहा था कभी भी पीछे मत हटो।

– आनन्द प्रकाश (काली जगदीशपुर)

चूहा : (बिल्ली से) बिल्ली मौसी! आज तुम्हारी मेरे यहाँ दावत है।

बिल्ली मौसी : जरूर–जरूर आऊँगी तुमने बुलाया जो है।

बिल्ली मौसी शाम को आई और चूहे से बोली– म्याऊँ–म्याऊँ। यह सुनकर चूहा बोला– रूको–रूको जरा मैं छुप जाऊँ।

भिखारी : भगवान के लिए अंधे भिखारी को कुछ दे दो बाबा।

राहगीर : भीख तो दे दूँ पर कैसे मानूं कि तुम अंधे हो?

भिखारी : साहब क्या सामने वाले लाल मकान की छत पर बैठा सफेद कबूतर आपको दिख रहा है?

राहगीर : हाँ, मुझे तो दिख रहा है।

भिखारी : लेकिन वह कबूतर मुझे दिखाई नहीं दे रहा है।

एक व्यक्ति होटल में भोजन करने पहुँचा।

बैरा : साहब! हमारे यहाँ आपको बिल्कुल घर जैसा ही भोजन मिलेगा।

व्यक्ति : तो फिर मैं घर जाकर ही भोजन कर लूँगा।

किरायेदार : क्या छत से हमेशा पानी टपकता है?

मकान मालिक : नहीं जनाब, सिर्फ वर्षा के दिनों में ही टपकता है।

डॉक्टर : पिछली बार याददाश्त बढ़ाने के लिए जो दवा ले गये थे उससे कुछ फर्क पड़ा?

मरीज : अभी तक कुछ फर्क नहीं पड़ा, रोज दवा लेना ही भूल जाता हूँ।

अध्यापक : (छात्रों से) खानवा का युद्ध किनके बीच हुआ था?

– एक छात्र तेजी से खड़ा हुआ।

अध्यापक : हाँ बताओ?

एक छात्र : सर, मेरे बीच नहीं हुआ था।

एक नौकर ने अपने कंजूस मालिक से कहा– साहब! मैंने ख्वाब में देखा कि आपने मुझे एक हजार रुपये एडवांस दिये हैं।

मालिक ने कहा– ठीक है, अगले महीने की तनख्वाह से काट लिये जाएंगे।

– गुरविन्द्र सिंह (इन्द्रगढ़)

घमण्ड का नतीजा

बाल कहानी : विभा वर्मा

सुन्दरवन में भीक्कू गीदड़ कई दिनों से भूखा और बीमार था। उसमें इतनी शक्ति भी नहीं थी कि अपनी भूख मिटाने के लिए शिकार कर सके। वह लाचार हो एक वृक्ष के नीचे पड़ा रहता।

एक दिन एक शेर भैंस का शिकार कर अपनी गुफा में जा रहा था। तभी उसकी नजर ललचायी आँखों से देखते हुए भीक्कू गीदड़ पर पड़ी। उसकी कमजोरी एवं असहाय अवस्था को देखकर शेर को दया आ गयी। वह उसे अपनी पीठ पर लादकर अपनी गुफा में ले गया और वहाँ पड़ा हुआ बासी मांस उसे खाने को दिया।

इसी तरह बैठे–बैठे ही थोड़ा–बहुत उसे प्रतिदिन कुछ न कुछ खाने को मिल जाता। कुछ ही हफ्तों में वह पहले जैसा मोटा–ताजा हो गया। धीरे–धीरे वह काफी बलवान भी हो गया और उसे अपनी ताकत पर घमण्ड भी होने लगा। अब अपने ही स्वजातीय बन्धुओं से वह अपने को श्रेष्ठ समझने लगा। वह भालू, बन्दर, लोमड़ी और खरगोश से टक्कर लेने में भी नहीं चूकता।

एक दिन भीक्कू गीदड़ ने कक्कू हाथी का ही शिकार करने की योजना बना ली। उसने अपने मन का विचार जब शेर को बताया तो शेर बोला– अरे

भीक्कू गीदड़! कक्कू हाथी बहुत शक्तिशाली है। उसका शिकार तेरे बस की बात नहीं है। पर भीक्कू गीदड़ ने उसकी एक भी न सुनी।

कुछ दिनों बाद संयोग से कक्कू हाथी उधर से गुजर रहा था। बस फिर क्या था? भीक्कू गीदड़ दौड़कर एक चट्टान पर बैठ गया। वह मन ही मन योजना बनाने लगा कि जैसे ही कक्कू हाथी इधर से गुजरेगा वह उस पर धावा बोल देगा।

कुछ देर बाद जैसे ही कक्कू हाथी चट्टान के समीप आया भीक्कू गीदड़ ने उसकी गर्दन पर हमला कर दिया। लेकिन यह क्या? भीक्कू गीदड़ उसकी गर्दन के बजाए उसके पैरों में गिर पड़ा।

इस घटना से कक्कू हाथी बिल्कुल अनभिज्ञ था। हड़बड़ाहट में उसने अपना पैर भीक्कू गीदड़ पर रख दिया, जिससे उसका उसी समय कचूमर निकल गया। पास ही में कुछ दूर खड़ा शेर यह दृश्य देख रहा था। वह यह दृश्य देखकर ताली बजा–बजाकर कहने लगा– 'सच है घमण्डियों की यही दशा होती है।' ◆

पेड़ बड़ा उपकारी है

बाल कविता : रामअवध राम

प्रकृति की सारी चीजों से,
होती भलाई हमारी है।
इन सब में देखा जाये तो,
पेड़ बड़ा उपकारी है।।

प्रदूषण को शोषित कर,
शुद्ध बनाये ऑक्सीजन।
जिसमें हम सांसें लेकर,
जीते हैं सुरक्षित जीवन।।

पंछी इस पर करें बसेरा,
कितना ही सुख पाते हैं।
प्रातः सबसे पहले उठकर,
गीत खुशी के गाते हैं।।

मिट्टी के कटाव को रोके,
चहुंओर सुगन्ध फैलाते हैं।
अपनी सुन्दरता से ये,
धरती को स्वर्ग बनाते हैं।।

गर्मी में इसकी छाया,
तन को देती शीतलता।
स्वयं न अपना फल ये खाये,
औरों के लिए फलता।।

पौधे

कविता : गफूर 'स्नेही'

पौधे लगाए वर्षा में,
बाग में जगह रहे न।
सब जगह नजर आए,
बाढ़ में बहे न।।

दादाजी ने लगाए पेड़,
लेते सूखे से मुठभेड़।
हम भी उनमें जोड़े और,
रहे न कोई और छोर।।

पीढ़ी दर पीढ़ी है,
यही तो जीवन की सीढ़ी है।
आओ हम गुलजार करें,
खड़ी एक बहार करें।।

आपके पत्र मिले

मैं हँसती दुनिया का पुराना पाठक हूँ। इस पत्रिका से हमें बहुत ज्ञान प्राप्त होता है। मेरे दोस्तों को भी यह पत्रिका बहुत अच्छी लगती है। बोधकथा 'तीन बातें' तथा बाल कहानी 'एक बूंद की कीमत' बहुत ही शिक्षाप्रद हैं। जिसको पढ़कर बच्चों के मन का बौद्धिक विकास होता है। हँसती दुनिया के सभी अंक ज्ञानवर्द्धक होते हैं।

– पूरन सिंह सैनी (राजनगर, नई दिल्ली)

मैं हँसती दुनिया का सदस्य हूँ। मुझे हँसती दुनिया के हर अंक की कहानियां एवं कविताएं अच्छी लगती हैं।

इसकी कहानियां शिक्षाप्रद होती हैं जो हमें ज्ञान देती हैं।

यह पत्रिका हम सबको अच्छे गुणों तथा संस्कारों को प्राप्त करने की प्रेरणा देती है।

– गणेश राय (दिल्ली)

हम सभी को हँसती दुनिया पढ़ना बहुत पसन्द है। हम पिछले दस सालों से यह पत्रिका पढ़ रहे हैं। हँसती दुनिया हम सभी को एक आदर्श जीवन जीने की प्रेरणा देती है।

इसकी सामग्री शिक्षाप्रद, मनोरंजक एवं ज्ञानवर्द्धक होती है। यह पत्रिका बच्चों के साथ–साथ बड़ों के लिए भी उपयोगी है। हमने यह पत्रिका कई बच्चों को भेंट की है। उनको भी यह बहुत पसन्द आई।

इसमें प्रकाशित 'अनमोल वचन' और 'कभी न भूलो' हमारे मन में एक सकारात्मक सोच भर देते हैं। 'सम्पूर्ण अवतार बाणी' की व्याख्या हमारे अध्यात्म को और मजबूती प्रदान करती है।

– अविनाश, विश्वनाथ (भिवंडी)

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। जून माह की पत्रिका प्राप्त हुई। आवरण पृष्ठ देखकर मन पुलकित हो उठा।

इसकी सभी कहानियां एवं कविताएं शिक्षाप्रद हैं।

यह पत्रिका बच्चों के लिए शिक्षाप्रद एवं अनमोल तोहफा है।

– सौरभ कुमार (हरदोई)

हँसती दुनिया में प्रकाशित सम्पूर्ण सामग्री शिक्षाप्रद होती है। यह बच्चों को ही नहीं बड़ों को भी प्रभावित किये बिना नहीं रहती।

इस पत्रिका की हर एक कहानी जहाँ बच्चों का मार्गदर्शन करती है वहीं बड़ों को भी प्रेरणा देती है।

मैं प्रभु से यही प्रार्थना करता हूँ कि यह भविष्य में भी बच्चों का इसी तरह मार्गदर्शन करती रहे।

– विक्रम पाल सिंह

हम सब आप द्वारा भेजी हँसती दुनिया पढ़ते हैं। इससे बच्चों को आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती है। ये बच्चों और युवाओं के लिए शिक्षाप्रद पत्रिका है।

स्तम्भों में 'विज्ञान प्रश्नोत्तरी', 'कभी न भूलो' तथा 'अनमोल वचन' शिक्षाप्रद होते हैं। आप आगे भी इसी तरह हँसती दुनिया भेजते रहें ताकि हम इससे शिक्षा ग्रहण करते रहें।

– हिमांशी (राजपुरा)

जून अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1. **कनिका कलवानी** — **13 वर्ष**
   एच–18, राधापुरम एक्सटेंशन,
   बिरला मंदिर, मथुरा (उ.प्र.)

2. **अभिजीत प्रजापति** — **13 वर्ष**
   गाँव : बंशीपुर, पोस्ट : अमिलाई,
   जिला : चन्दौली (उ.प्र.)

3. **समीक्षा** — **10 वर्ष**
   वार्ड नं. 10, भाईयाना बस्ती,
   बुढलाडा, जिला : मानसा (पंजाब)

4. **सवेरा राय अरोड़ा** — **7 वर्ष**
   64, आर. बी. एस्टेट, लोहारका रोड,
   अमृतसर (पंजाब)

5. **विधिता भारद्वाज** — **6 वर्ष**
   सेक्टर –18, द्वारका,
   नई दिल्ली

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्ठियों को पसन्द किया गया वे हैं-

इशाना ठकराल
(गीता कालोनी, नई दिल्ली),
रिद्धि सैनी
(राजनगर, नई दिल्ली),
आदित्य कुमार, राजकुमार,
अनुष्का, मानवी राज, रानी कुमारी
(गाँधी नगर, मोतिहारी),
अभिनव सिंह
(मझगाँव, चन्दौली),
प्रियंका, मोहित गुरनानी, यशिका
देवजानी, प्रनीति जोशी, मंथन पंजवानी,
निहारिका अडवानी, हीर कलवानी,
लहर मूलचंदानी, माही मूलचंदानी, कुंज,
नामिया बुधवानी, आरूही, यश भोजवानी,
परी, पीयूष समियानी, कृष्णा,
जिगर राजाई, मुस्कान,
सुमित रूपाणी, भविका, हनिशा,
जीविका रामचंदानी, कीर्ति,
हर्षिका इसरानी, परी,
आयुषी असनानी, मोक्ष (गोधरा)।

vxLr vad jax Hkjks

पृष्ठ 50 पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर–सुन्दर रंग भरकर 25 अगस्त तक कार्यालय 'हँसती दुनिया', एडमिनिस्ट्रेटिव ब्लॉक, निरंकारी सरोवर कॉम्प्लेक्स, दिल्ली–110009 को भेज दें।

- पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) अक्टूबर अंक में प्रकाशित किये जाएंगे।
- चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।
- 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

कृपया चित्र में रंग भरकर डाक द्वारा ही भेजें। 'ई–मेल' या 'व्हाट्सएप्प' से नहीं।

रंग भरो

नाम : ..... आयु : .....

पिता का नाम : .....

पूरा पता : .....

.....

..... पिन कोड : .....

Nirankari Radio

radio.nirankari.org

24x7

Kids Divine

ek ruhani muskaan

kids.nirankari.org

Catch the latest episode on 23rd of every month

IT'S LIVE, DOWNLOAD NOW

NEWS DIVINE

www.nirankari.org

Catch the latest episode on 10th of every month

सुनो तराने नए पुराने

Nirankari Radio

Bhakti Sangeet

radio.nirankari.org

Catch the latest episode on 20th of every month

महफ़िल ए रूहानियत

Mehfil-E-Ruhaniyat

Special programme

Voice DIVINE

radio.nirankari.org

Catch the latest episode on 1st & 16th of every month

SV

SOUL VIBES

radio.nirankari.org

Catch the latest episode on Last Friday of every month

Video & Audio Webcasts on www.nirankari.org - Every month

SANT NIRANKARI MISSION

Prescribed Dates 21st & 22nd , Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)
Posted at LPC Delhi RMS Delhi - 110006

Registered with the : Delhi Postal Regd. No. DL (N) 136/2021-2023
Registrar of Newspaper : License No. U (DN) -23/2021-2023
For India Under RNI No. 25672/1973 : Licensed to post without Pre-payment

NIRANKARI JEWELS

78-84, Edward Line, Kingsway Camp, Delhi, 110009
Near G.T.B. Nagar Metro Station Gate No. 4

011-42870440, 42870441, 47058133
nirankari_jewels@hotmail.com
www.nirankarijewels.com
@nirankarijewelsdelhi
Nirankari Jewels Pvt. Ltd.

Monday Closed

Customer Care : **9818883394**